# निहकलंक

## (निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

ऐ धरनीए, **जोती जोत सरूप हरि,** जोती आत्मा जोत परमात्मा जो सर्ब आत्मा दा परमात्मा है और जोत सरूप है। सरीर नहीं तन नहीं वज़ुद नहीं माटी ख़ाक नहीं, और उसे परमात्मा नूं, जोत सरूप नूं, निहकलंक किहा गिआ है। किसे इन्सान नूं निहकलंक नहीं किहा गिआ।

**महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,**

जेहड़ा परमात्मा जोत सरूप निहकलंक है, उह ही सारयां दा महाराज ते सारयां दा पातशाह है। उह ही सारयां नूं भय विच्च रक्खण वाली समरथ ताकत है। उह ही सारयां दी पालणा करन वाला है विष्नूं रूप हो के और अन्त तक्क रहण वाला भगवान वी है।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

नानक सतिगुर कहि के गिआ महांबली उतरे अवतार, मात पित ना कोई बणाईआ। मुहम्मद कह के गिआ आए अमाम यार, यारी यारां नाल निभाईआ। ईसा कहे मेरा पिता फेरा मारे परवरदिगार, बेपरवाह सच्चा शहनशाहीआ। मूसा कहे जिस दा जलवा तक्क के डिगा मूंह दे भार, अन्तम फड़ के बाहों लए उठाईआ। वेद व्यासा लिख के गिआ अपार, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चा टिल्ला परबत दए सुहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कहे मेरी किसे ना पाई सार, थोड़े थोड़े इशारे गिआ जणाईआ। कलिजुग अन्तम इक्क इकल्ला आवे आपणी वार, वारता सभ दी वेख वखाईआ। कागद कलम शाही ना लिखणहार, कातब रोवण ज़ारो ज़ार, तुआकब करे बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेरी आदत दीन मज़ूब ज़ात पात जुग चौकड़ी दित्ती वगाड़, मनमत कूड़ा राह चलाईआ । अग्गे

इक्को इबादत दस्से हरि निरँकार, सख़ावत आपणी झोली पाईआ। उलफ़त करे सर्ब संसार, ग़फ्लत कोई रहण ना पाईआ। महिफ़ल ला के गुर अवतार, पीर पैगम्बर नग़मा नाम सुणाईआ। इक्को शमा होए उजिआर, दीपक दीआ डगमगाईआ। दूसर कोई ना करे निमस्कार, बिन पुरख अकाल सीस ना कोई झुकाईआ। वाअदा कीता गुर अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वंड वंडाईआ। भरमे भुल्ले ना कोई संसार, भरम भुलेखे विच्च हरि जू कदे ना आईआ। लिखयां पढ़यां एह करनी विचार, बिन लेखा लिखयां नज़र किसे ना आईआ। हरि का लेखा सदा लिखण पढ़न तों बाहर, अलफ़ ये हद्द ना कोई वंडाईआ। निक्की निक्की पीर पैगम्बरां नाल करदा रिहा ग़ुफ़तार, ग़ुफ़त आपणा राह जणाईआ। जे कोई अगाँह हो के वेखे दिसे परवरदिगार, नूर नुराना नज़र किसे ना आईआ। इक्को सतिगुर नानक पुरख अबिनाशी आपणे चरन दए वखाल, सचखण्ड दुआरे दित्ती वडयाईआ। कबीर जुलाहे प्रीती बज्झी नाल, श्री भगवान आप निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निरगुण हरि नरायण, रसना कोई ना सके कहण, कह कह अन्त कोई ना पाईआ। (१४—१८४ १८५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

निहकलंक हरि शब्द है, जुग जुग भेख वटाए। इक्क सुहाए दवार बंक है, बंक दवारी आप अखवाए। आपे राओ आपे रंक है, ऊँचां नीचां विच समाए। जन भगतां लाए जोती तनक है, शब्दी वाजा पवण वजाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचन रचाए।

निहकलंक नर निरँकार है, साचा सति सरूप। लक्ख चुरासी आत्म घर वसाए दवार बंक है, हरि हरि वड्डा शाहो भूप। नूर उजाला जोती कणक है, पृथ्मी आकाश अन्ध कूप। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग मात भेख धर, करे खेल अनूप सरूप।

निहकलंक नर निरँकार है, निरगुण रूप समाए। पंज तत ना कोई आकार है, हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोई दिसाए। एका शब्द साची धार है, लोआं पुरीआं विच्च समाए। त्रैगुण माया सृष्ट अपार है, प्रभ आपणा रथ चलाए। आपे वसे सभ तों बाहर है, हर घर में आप समाए। आपे गुप्त आपे जाहिर है, आपे अंदर मन्दर डेरा लाए। आपे जोत निरञ्जण कर आकार है, शब्द अनादी धुन वजाए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जुग जुग भेख वटाए।

निहकलंक नर नरायण है, वसे धाम अगम्म। भगत सुहेला वेखे तीजे नैण है, ना मरे ना पए जम्म। रसना किसे ना सके कहण है, आपे जाणे आपणा नम। जुग जुग जगत वहाए एका वहण है, शब्द बणाए साचा थम्म्। जन भगतां चुकाए लहणा देण है, पवण स्वासी शब्द चलाए दम। सन्त सुहेले विरले गुरमुख लैण है, मनमुख रोवण छंम छंम।

धन्न धन्न जो जन रसना कहण है, एका एक पारब्रह्म । जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे जाणे आपणा कम्म।

निहकलंक निहकलंक निहकलंक, जोती हरि अकाल है। शब्द वजाए साचा डंक, जुग जुग अवल्लड़ी चाल है। आप रखाए एका अंक, सन्त सुहेले साचे लोकमात आपे भाल है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए दीन दयाल है।

दीन दयाल किरपाल, जुग जुग भेख वटाइंदा। जन भगतां भरे शब्द भंडार, साचे घर दर आप सुहाइंदा। आत्म खोल्ह बन्द किवाड़, आपे हत्थीं कुण्डा लाहिंदा। नेड़ ना आए पंचम धाड़, काल महांकाल मुख छुपाइंदा। वज्जे ताल बहत्तर नाड़, धुन अनादी आप उपजाइंदा। करे जणाई बोध अगाध, साचा मन्दर इक्क सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण डेरा लाइंदा। (२ अस्सू २०१३ बि)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

निहकलंक कल प्रभ आए। निहकलंक कल जामा पाए। निहकलंक जोत सरूपी जोत समाए। निहकलंक भरम भुलेखे जगत भुलाए। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए आप सहाए।

निहकलंक प्रभ नाउँ रखाया। निहकलंक जोत सरूपी जामा पाया। निहकलंक गुरमुख साचे विच्च समाया। निहकलंक आपणा आप कल छुपाया। निहकलंक बेमुख जीवां दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत जोत प्रगटाया।

निहकलंक खेल अपारे। निहकलंक जामा घनकपुरी विच्च धारे। निहकलंक गुरमुख साचे बख्शे चरन प्यारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कल जामा मात विच्च धारे।

निहकलंक कल जामा पाया। झूठा तन जगत तजाया। जोत सरूपी प्रगट जोत जोत सरूपी खेल रचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तम अन्त कराया।

निहकलंक कल अन्त कराए। निहकलंक सोहँ साचा शब्द चलाए। निहकलंक महिंमा अगणत गणी ना जाए। निहकलंक जीव जंत विच्च रिहा समाए। निहकलंक गुरमुख विरले सन्त आप आपणी बूझ बुझाए। निहकलंक प्रभ साचा कन्त गुरमुख भेव खोल्ह खुल्ह़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दूजा भउ चुकाए।

निहकलंक खेल आप निरँकार। निहकलंक राम अवतार। निहकलंक कृष्न मुरार। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग आया जामा धार।

निहकलंक कल जामा पाया। भगत भगवन्त मेल मिलाया। अचरज खेल प्रभ आप कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चरन सेव लगाया।

निहकलंक अगम्म अथाह। निहकलंक बेपरवाह। निहकलंक दिसे हर थां। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई ना।

निहकलंक निराधार। निहकलंक जोत अधार। निहकलंक भगत उधार। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी आप गिरधार।

निहकलंक निरवैर समाए। निहकलंक ऊँच नीच भेव चुकाए। निहकलंक वड वड नरेश आपणी सेव लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तम अन्त जोत प्रगटाए।

निहकलंक सति कर्म कमावणा। निहकलंक पार बिआसों चरन लगावणा। निहकलंक मसतूआणा सच धाम उपजावणा। निहकलंक राणा संगरूर चरन लगावणा। निहकलंक गुण भरपूर जोत सरूप दरस दिखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा मिटावणा। (६ विसाख २००६ )

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

मन मत बुद्धि दा जो बिआना, रसना नाल गाईआ। इस तों परे खेल श्री भगवाना, बिन अनभव दृष्टी समझ किसे ना आईआ। जो लेखा जाणे दो जहाना, दरगह साची सोभा पाईआ। जिस दा रूप रंग रेख सके ना कोई पहचाना, नादां विच्च ना कोई शनवाईआ । उह मालक ख़ालक प्रितपालक धुर दा काहना, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस दा चार जुग दे शास्त्र गाणा, अवतार पैगम्बर गए कर के सिफ्त सालाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला नौजवाना मर्द मरदाना निहकलंक बली बलवाना, रूप अनूप शाहो भूप आपणे विच्च छुपाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बदलणा हुक्म दे नाल ज़माना, ज़िमीं ज़मां धुर दा खेल वेख वखाईआ। उह व्यक्ती रूप हो के कदी ना बणे प्रधाना, आपणी सिफ्त विच्च ना कोई सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ।

निहकलंक हरि निरँकारा, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जो जोती जोत उजिआरा, रूप रंग रेख कहण कोई ना पाईआ। जो वसे सचखण्ड सच्चे दवारा, दर साचे डेरा लाईआ। जिस नूं कहन्दे सो हरि पुरख निरञ्जण मीत मुरारा, आदि निरञ्जण अगम्म अथाहीआ। अबिनाशी करता श्री भगवान पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करे कराए करनेहारा, करता पुरख वड वडयाईआ। उस दा बुद्धि विच्च करे किआ कोई विसथारा, विचर के सके ना कोई सुणाईआ। उह मंज़ल चढ़ के निरअक्खर पढ़ के पाओ ओस प्रभ दी सारा, जो परा

पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

जोत निरँकार आदि जुगादी निहकलंक, नर नरायण वड्डी वडयाईआ। जिस दा शब्द अगम्मी वज्जे डंक, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रिहा सुणाईआ। जिस दा लक्ख चुरासी जीव जंत, साध सन्त विच्च समाईआ। जो आत्म परमात्म धुर दा कन्त, कन्तूल इक्क अखवाईआ। उस दी पंज तत बणाए कोई ना बणत, रजो तमों सतो ना कोई चतुराईआ। उस दा गढ़ नहीं कोई हउमे हंगत, माया ममता ना कोई अखवाईआ। उह जगत वासना मनशा दी बणाउँदा नहीं कदे संगत, जगत चतुराईआ ना कोई रखवाईआ। उह लेखा जाणे आदि अन्त, जुगा जुगन्त आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा नाम अगम्मा बिन अक्खरां वाला मंत, शब्द शब्द शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वडयाईआ।

निहकलंक हरि एक है, एका एकँकार। ना कोई दूसर टेक है, ना कोई मीत मुरार। ना कोई जगत नेत्र सके वेख है, ना कोई पावे सार। उस दा जोत सरूपी भेख है, जोती जामा अगम्म अपार। जो वसे सचखण्ड देस है, लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां होवे उजिआर। उह सम्बल बह के दए संदेश है, शब्द शब्द दी धार। जिस दा हुक्म हुक्म दा लेख है, गुर अवतार कातब बणे लिखार। उस दा कोई ना जाणे भेत है, बेअन्त सच्ची सरकार। उह सभ नूं वेखे नेतन नेत है, नव सत पाए सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वसणहार सचखण्ड सचे दवार।

निहकलंक हरि आप है, दूसर अवर ना कोई। जिस दा ना कोई माई बाप है, मन्दर मकान ना किसे सोहे। ना कोई अक्खरां वाला पढ़े जाप है, ना कोई सिफ्ती सिफ्त सालाहे। ना कदे पवित ना पाक है, दुरमत रूप ना कोई वटोए। ना कोई सज्जण साक है, मीत मुरार ना अखवाए कोई। ना कोई खोल्हे ताक है, ना करता पाए सोए। जिस दा अवतार पैगम्बर गुरूआं गाया भविख्त वाक है, सो इक्को पुरख अकाला आदि अन्त होए। जिस दा अक्खरां वाला दए कोई ना सात है, पढ़न वाला ना उस नूं टोहे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी एका एक जोत बलोए।

निहकलंक हरि निरँकारा, निरगुण रूप समाईआ। रूप रंग रेख तों बाहरा, जोती जाता डगमगाईआ। शब्दी शब्द शब्द नगारा, दो जहान करे शनवाईआ। चौदां तबकां वसे बाहरा, चौदां लोक सार ना आईआ। जिस नूं झुकदे चन्द सूर्या ज़िमीं असमान सितारा, दर दर बैठे सीस निवाईआ। इस दा सम्बल धाम नयारा, साढ्ठे तिन्न हत्थ वज्जे वधाईआ। जिस विच्च बह के वेखे विगसे पावे सारा, वेखणहार आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। उहनूं तन वजूद दा लालच नहीं कोई विच्च संसारा, पंजां तत्तां ना कोई चतुराईआ। उस दा आदि

अन्त दा सिफ्ती इक्क भंडारा, जिस नूं कोटन कोट गा गा आपणा शुकर मनाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगारा सांझा यारा, नूरो नूर अलाहीआ। ज़रा गुरमुखो इस तों उत्ते करो विचारा, विचरन दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ।

जगत वेखणा ना कोई वक्त, तन वजूद ना कोई वडयाईआ। जिथ्थे निरगुण धार वसे प्रभू दी शक्त, शहनशाह आपणा रंग रंगाईआ। जिस दा हुक्म संदेशा धार अगम्मी वस्त, अमोलक आप टिकाईआ। ओस दे नाल काहदी हसद, वैर भाव विच्च हत्थ किछ ना आईआ। जिस दे विच्च जोत निरँकारा निरगुण हो जाए मस्त, मेहरवान आपणी खुशी मनाईआ। उह खेल वखाए उत्ते अर्श फर्श , फर्श दे उप्पर आपणी धार प्रगटाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सभ दे उत्ते तरस, रहमत सच कमाईआ। ज़रा उस नूं तक्को आपणी नज़र परत, दीन दुनी तों बाहर कढ्ढाईआ। जिस गृह विच्च घर विच्च मुकाम विच्च पुरख अकाल ने अवतार पैगम्बर गुरूआं खाली आपणी लाई शर्त, शरअ शरअ विच्च समझाईआ। उस दा खेल सदा असचरज, विद्या विच्च समझ किसे ना पाईआ। उह धुर दा मर्द मरदाना मरद, योधा इक्क अखवाईआ। जिस नूं पोह सके ना जगत शरअ वाली करद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ।

व्यक्ती नूं लोड़ नहीं मेरी होवे वड्डिआई, वड्डा तन ना कोई अखवाईआ। जिस पुरख अकाल ने आपणी बणत बणाई, सो रचना वेखे चाईं चाईंआ। सो सम्बल बैठा नूर कर रुशनाई, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दा शब्द शब्द गुरदेव देवे दुहाई, दो जहानां करे शनवाईआ। उस साहिब दे नाल काहदी लड़ाई, जो सभ दा मालक इक्क अखवाईआ। उह अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार जोत निरँकार जोती जाता पुरख बिधाता बणके अगम्मा राही, रहबर हो के वेख वखाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी निहकलंक अवतार जिस दी महिंमा जगत ज़बान लखी ना जाई, कातब चले ना कोई चतुराईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक नूर नुराना परवरदिगार धुरदरगाही, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक्क अखवाईआ। (२५ अस्सू शहनशाही सम्मत ६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

लेखा हत्थ रक्खे निरँकार, निरगुण वड्डा वड वडयाईआ। साचे सन्तो करो विचार, सतिगुर वसे केहड़े थाईंआ। जिस दा मिले सच दीदार, बिन अक्खां नज़री आईआ। रातीं सुत्यां करे प्यार, दिने जागदिआं गले लगाईआ। पंजां चोरां करे ख़बरदार, अंदर लँघण कोई ना पाईआ। नाम खण्डा मारे मार, गोबिन्द गुर गिआ जणाईआ। गुरसिख कोई ना जाए हार, जित सभ दी झोली पाईआ। फ़तह डंका वज्जे विच्च संसार, पुरख अकाल आप

वजाईआ। निहकलंक निरगुण अवतार, किसे जंम्मया ना पिता माईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, घट घट रिहा समाईआ। जिस ने करना ओस दा सच दीदार, दोए जोड़ मंगो प्रभ झोली देवे पाईआ। फड़ बाहों लए उठाल, आपणे गले लगाईआ। जलवा दस्से इक्क जमाल, ज़हूर इक्को इक्क रुशनाईआ। सभ दा लेखा चुकाए शाह कंगाल, ग़रीब निमाणे कोई ना वंड वंडाईआ। जे किसे नूं कोई दुःख करे सवाल, सभ दा दुखड़ा दए मिटाईआ। काया मन्दर अंदर वखाए सच्ची धर्मसाल, जिस घर गुर सतिगुर बैठा डेरा लाईआ। रौला पाओ ना मिले कोई मिसाल, मिसल सभ दी रिहा लिखाईआ। बिन सतिगुर पूरे सारे होण बेहाल, अग्गे मिले ना बेपरवाहीआ। नाता जुड़े नाल काल, राए धर्म बन्हे थाउँ थाईंआ। चित्रगुप्त लेखा दए वखाल, बच्या कोई रहण ना पाईआ। लाड़ी मौत मारे शाह कंगाल, दर दर घर घर आपणा फेरा पाईआ। चार कुण्ट जे भज्ज भज्ज लभ्भो हत्थ ना आवे दीन दयाल, पान्धीआं पन्ध ना कोई मुकाईआ। हो निमाणे कर बेनन्ती मंगो नाम सच्चा धन माल, अतुट ख़ज़ाना झोली देवे पाईआ। गुर गोबिन्द नाल मेले हो किरपाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दाता पुरख बिधाता जन भगतां रक्खे उत्तम जाता, आपणी ज़ात ना कोई वखाईआ।

भगत जनो सुणो सच्च, हरि साचा सच जणाइंदा। काया माटी भाण्डा कच्च, थिर रहण ना पाइंदा। मन वासना सारे रहे नच्च, गुरमत गुरमुख विरला झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी आपणी कार कमाइंदा। (१४—१७५ १७६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

सतिगुर पूरा निहकलंक, निरगुण सदा अखवाईआ। शब्द वजावे इक्को डंक, दो जहान शनवाईआ। जन भगतां लेखा मुकाए आदि अन्त, जुग जुग वेख वखाईआ। सभ दा कढ़ु संसा शंक, आपणा भेव खुल्हाईआ। जिस बणाई गुर अवतारां पीर पैगम्बरां बणत, बेपरवाह नूर खुदाईआ। आदि जुगादी लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त साचा कन्त, श्री भगवान वड वडयाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान खाणी बाणी जिस दी महिमा गाए अगणत, लिख लिख लेख ना कोई मुकाईआ। जिस नूं नानक गोबिन्द किहा कल कलकी आवे अन्त, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। सृष्ट सबाई पढ़ाए इक्को मंत, मंत्र हरि हरि नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा घर घर, निहकलंक शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ।

निहकलंक सतिगुर बलवान, नाम खण्डा हत्थ उठाइंदा। गोबिन्द मंगया अन्तम दान, पुरख अकाल अग्गे झोली डाहिंदा। कवण वेला मिले आण, लोकमात फेरा पाइंदा। श्री भगवान कहे नौजवान, कलिजुग अन्तम वेख वखाइंदा। सदी बीसवीं वेखे मार ध्यान, बीस बीसा राह तकाइंदा। परम पुरख सतिगुर सच्चा सदा मेहरबान, मेहर नज़र उठाइंदा।

जिस जन अन्तर आत्मा देवे आपणा ज्ञान, तिस निहकलंक निरगुण नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, सतिगुर आपणा परदा लाहिंदा।

धन्न धन्न धन्न धन्न रसना कहे, जिह्वा मिले वडयाईआ। जिस धाम सतिगुर सच्चा बहे, सो थान सोभा पाईआ। गुरसिख गुरमुख प्रभ मिलण दी रक्खे लै, इक्को ओट तकाईआ । सदा सदा सद श्री भगवान दी जै, जै जैकार करे लोकाईआ। लक्ख चुरासी कलिजुग अन्तम मरे खैह, घर घर पए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात फेरा पाईआ। (२ फग्गण २०१६ बि)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

निहकलंक हरि नाउँ है, निरगुण रूप समाए। वसे हर घट थाउँ है, दिस किसे ना आए। शब्द अनादी बेपरवाहो है, बेपरवाह अखवाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंका नाउँ धराए।

निहकलंका हरि निरँकार, एका एक अखवाइंदा। एका डंक शब्द अपार, जुग जुग आप वजाइंदा। दो जहानां करे ख़बरदार, पुरीआं लोआं आप उठाइंदा। निरगुण सरगुण कर विचार, आप आपणा कर्म कमाइंदा। जग जुगत बन्ने धार, जोग जुगत इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाउँ धराइंदा।

निहकलंका नाम निधान, नर हरि आप अखवाया। एका शब्द इक्क ज्ञान, इक्क ध्यान लगाया। एका चरन धूड़ सच्चा इशनान, सर सरोवर इक्क वखाया । एका जोती आत्म ब्रह्म ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाया। अमृत आत्म पीण खाण, तृस्ना भुक्ख गवाया। मूर्ख मूढ़ बणाए चतुर सुघड़ सिआण, आप आपणी दया कमाया। हरि का शब्द सच निशान, जुग जुग आप चलाया। जोधा सूर बली बलवान, निहकलंका आप अखवाया । राओ रंकां वेखे मार ध्यान विच्च जहान, दवार बंका फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया।

निहकलंका नर निरञ्जण, नर नरायण अखवाया। ना कोई घड़े ना मात भज्जण, ना कोई बणत बणाया। ना कोई ताल तलवाड़ा दर दवारे वज्जण, वजावणहार दिस ना आया। आप आपणा बणया सज्जण, शब्द मीत इक्क रखवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक रिहा वखाया।

एका अंक एकँकार, एका कल वरताईआ। एक तन कर शिंगार, तन बस्तर इक्क सजाईआ। एका खण्डा इक्क कटार, इक्क गातरे रिहा पाईआ। एका शब्द एका धार,

एक एक रिहा चलाईआ । एका गुर एका अवतार, एका खेल खिलाईआ। एका साजण मीत मुरार, सखा सुहेला इक्क अखवाईआ । एका गुर एका चेला इक्क दवार, एका मंग मंगाईआ। एका दाता दानी भरे भंडार, एका खाली रिहा कराईआ। एका गुणवन्ता गुण रिहा विचार, गुण अवगुण वेख वखाईआ। एका रंग बसन्ता रिहा चाढ़, एका चोली रिहा रंगाईआ। एका हउमे हंगता देवे साड़, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। एका नानक एका अञ्जण मिल्या मेल कन्त भतार, एका सेज हंढाईआ। एका मंगता बणे भिखार, एका झोली अग्गे डाहीआ। एका पैज देवे सवार, एका गुर वड्डी वडयाईआ। एका शब्द एका धुन धुनकार, एका नाद वजाईआ। एका सुन इक्क समाध, इक्क ध्यान वखाईआ। एका बाणी बोध अगाध, अगाध बोध जणाईआ । एका एक रसना रहे अराध, एका एक लिव लाईआ। एका एक माधव माध, मोहण मोहणी रूप वटाईआ। एका एक सन्त साध, एका एक धूणीआं ताईआ। एका एक हरि शब्द हर रक्खणा याद, निहकलंका नाउँ रखवाईआ। जुग जुग सुणे लक्ख चुरासी तेरी फरयाद, धरत मात रही कुरलाईआ। जन भगतां देवे साची दाद, देवणहार आप अखवाईआ। हरिजन साचे लए लाध, गुर गोबिन्दा मेल मिलाईआ। शब्द डोरी लए बांध, एका तन्दन तन्द बंधाईआ। खेले खेल आदि जुगादि, आदि जुगादी आप अखवाईआ। कलिजुग अन्तम देवे दाद, नानक गोबिन्द गिआ लिखवाईआ। खेले खेल हरि ब्रह्माद, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। मेट मिटाए जगत विवाद, विकार हँकार रहण ना पाईआ। पकड़ उठाए नौं नौं नाथ, सिध चुरासी रिहा हिलाईआ। ईसा मूसा छड्डणा साथ, चार यारी संग तुड़ाईआ। सीआं वंड वंडाए साढ़े तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चुमारा गिआ लिखवाईआ । आप चलाए आपणी गाथ, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। सोहँ सो एका राथ, रथ रथवाही आप अखवाईआ। जन भगतां मस्तक टिक्का लाए माथ, जोत निरञ्जण लिलाट करे रुशनाईआ। अमृत आत्म मारे ठाठ, ताल सुहावा इक्क वखाईआ। लेख चुकाए तीर्थ अठ्ठ साठ, घर मन्दर इक्क सुहाईआ। शब्द घोड़ा देवे साचा राठ, सोलां कलीआं आसण लाईआ । ना कोई पूजा ना कोई पाठ, निहकलंक तेरे दरस वड्डी वडयाईआ। लेखे लाए हड्डी तिन्न सौ साठ, बहत्तर नाड़ करे रुशनाईआ। आपे गेड़े काया उलटी लाठ, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। चरन दवारे इक्क इक्ठ, इक्क इकल्ला रिहा कराईआ। अन्तम मेला नद्व नद्व, साधां सन्तां राह खैहड़ा दिस ना आईआ। त्रैगुण माया प्रभ तपाए मद्व, पंच विकारा अगनी डाहीआ। सम्मत चौदां करे चद्व, गुरमुख साचे संग रलाईआ। आप तपाया जगत वखाया एका मद्व, जोती लंबू एका अगनी लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर आप अखवाईआ।

निहकलंक शब्द सितार, एका एक वजाइंदा। नानक गाए निरँकार निरँकार निरँकार, निरगुण वेख वखाइंदा। गोबिन्द पाया पुरख अपार, परम पुरख समाइंदा। दोए जोड़ ढह पए दवार, नेत्र नीर वहाइंदा। सिखी सिख्या कर विचार, सतिगुर साचा सीस झुकाइंदा। लिखया लेख धुर करतार, ना कोई मेट मिटाइंदा । पुरी अनन्द ना कोई घर बार, अनन्द अनन्द गुर चरनां इक्क वखाइंदा। शब्द छन्द ना कोई संसार, बन्द बन्द ना कोई कटाइंदा। मदिरा मास ना रसना बत्ती दन्द, गुर गोबिन्दा तीर चलाइंदा। तेग बहादर वर

पाया परमानंद, निज रूप आप समाइंदा। हरिकृष्न चढ़या जगत चन्द, बाल बाला सेव कमाइंदा। हरि हरि राए प्रभ आप बख्शंद, बख्शणहार दया कमाइंदा। हरिगोबिन्द जोधा सूर मरगिंद, आसण सिँघासण इक्क विछाइंदा। अरजन गुर सागर सिंध, बाणी बोध ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ांइंदा। राम दास साचा सर, पुरख अबिनाशी वस्सया घर, एका तरनी गिआ तर, सर सरोवर इक्क सुहाइंदा। अमरदास पाया वर, नार सुहागण सोहे दर, कन्त कन्तूहल सेज हंढाइंदा। अञ्जण अंग गिआ लग्ग, मिल्या मेल सूरे सर्बग्ग, कलिजुग माया अगनी ना गिआ दग, एका रंगण रंग चढ़ाइंदा। निरगुण नानक गिआ गा, आपणा आप मेट मिटा, पुरख अबिनाशी दर्शन पा, चार वरनां इक्क जणा, निहकलंक तेरी ओट रखा, एका डंक वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, एका नाउँ धराइंदा। (०६ ७०७)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

जोती जामा हरि निरँकार, गोबिन्द सेवा लाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटार, एका हत्थ फड़ाईआ। लोआं पुरीआं मारे मार, ना सके कोई बचाईआ। ब्रह्मा विष्नूं शिव देवत सुर करोड़ तेतीसा रोवण ज़ारो ज़ार, ना दिसे कोई सहाईआ। नौं खण्ड हाहाकार, सत्त दीप रहे कुरलाईआ। त्रैगुण माया कर शंगार, बैठी कजला पाईआ। पंज तत करे प्यार, जूठ झूठ कुड़माईआ। माया ममता कर प्यार, हउमे रोग गोद उठाईआ। कलिजुग कूड़े मारे मार, चारों कुण्ट डंक वजाईआ। साध सन्त होए विभचार, हरि हरि दरस कोई ना पाईआ। तीर्थ तट्टां कर विचार, साचा हट्ट ना कोई जणाईआ। हरि का शब्द ना करे कोई विचार, घर घर बैठे करन पढ़ाईआ। ग्रन्थी पन्थी गए हार, नानक गोबिन्द दरस ना पाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, अठ्ठे पहर जोती जोत डगमगाईआ। मरे ना जम्मे विच्च संसार, मड़ी गोर ना कोई दबाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुनकार, धुर दरबारे रिहा वजाईआ। सुणे सुणाए सुनणेहार, समरथ हत्थ वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कथनी कथ कथा आपणी आप करे जणाईआ। (७-३६५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

हरिजन हरि हरि पाया, पाया हरि गोबिन्द। सहिँसा रोग मिटाया, उतरी सगली चिन्द। हउमे रोग जलाया, हरि पाया सद बख़शिंद। तामस तिंसन गवाया, मिल्या मेल गुणी गहिंद। एका रंग रंगाया, गुरमुख उपजाए आप आपणी साची बिन्द। जोती जामा भेख वटाया, भाग लगाया भारत हिंद। सम्बल नगरी धाम सुहाया, मनमुख लगाए आपणी निंद। गुरमुख निर्मल जोत करे रुशनाया, अमृत धार वहाए सागर सिंध। हउमे हंगता देवे गढ़ तुड़ाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तम वेस वटाया।

कलिजुग अन्तम नैण उघाड़ा, नेत्र नीर वहाइंदा। चारों कुण्ट जूठी झूठी धाड़ा, ना

कोई संग निभाइंदा। फिरे दरोही जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, एका नाअरा लाइंदा। खुदी खुदाई वेखव विचारा, भेखधारी भेखव वटाइंदा। मुल्लां शेख़ मुसाइक पीर दस्तगीर गए हारा, ना कोई धीर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण लए वर, दर साचा इक्क सुहाइंदा ।

घर पाया पुरख अगम्म, सगली चिन्त मिटाईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात गरभ ना फेरी पाईआ। पवण स्वासी लए ना दम, ना नेत्र नीर वहाईआ। जुग जुग आपे जाणे आपणा कम्म, करता करनहार आप अखवाईआ। जन भगतां देवे शब्द सरूपी साचा तम, र्तिसना भुक्ख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, हरि गोबिन्द रूप समाईआ। (७ २०५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

हरि मन्दर हरि वस्सया, हरि रूप अगम्म अपार। हरि मन्दर हरि वस्सया, निरगुण जोत अकार। हरि मन्दर हरि हस्सया, हरि बैठ सच्ची सरकार। हरि मन्दर हरि आवे नस्सया, आदि जुगादी साची कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वार, निहकलंक लए अवतार।

निहकलंक हरि अवतारा, निरगुण जोत जगाईआ। प्रगट हो विच्च संसारा, पारब्रह्म वड्डी वडयाईआ। लेखा लिखे अपर अपारा, भेव अभेदा भेव जणाईआ। ना कोई जाणे जीव गवारा, लेखा लिखत विच्च ना आईआ। करे खेल हरि निरँकारा, खेलणहार सृष्ट सबाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, अकल कल वरताईआ। आदि पुरख अन्त आदि गुर अवतारा, जुग जुग वेस वटाईआ। कलिजुग अन्तम पावे सारा, निरगुण निर्मल जोती नूर करे रुशनाईआ। निर्मल जोती जोत अकाला, अकल कल अखवाइंदा। प्रगट होए दीन दयाला, दीनां बंधप दया कमाइंदा। हरि मन्दर वेखे धर्म सच्ची धर्मसाला, धरनी धरत सुहाइंदा। अमृत वेखे सर सरोवर इक्क उछाला, सर सरोवर वेखव वखाइंदा। गुरमुख वेखे साचे लाला, जोती जोत कवण जगाइंदा। कवण दवार फल लग्गे डाल़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण निरवैर आप अखवाइंदा।

हरि मन्दर हरि आदि निरञ्जण, आदि पुरख अखवाया। सर्ब जीआं दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराया। चरन धूढ़ी बख्शे साचा मज़न, चरन चरनोदक मुख चवाया। सदा सुहेला इक्क अकेला आपे होया पड़दे कज्जण, गुर चेला रूप वटाया। वेखण आए ठग्ग सज्जण, ठग्ग ठगौरी कलिजुग कलिजुग पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेखव धर, हरि की पौड़ी चरन छुहाया। (पहली जेठ २०१५ बि)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

लक्ख चुरासी वेखण आया, निरगुण जोती जामा धार। गुरमुख साचे परखण आया, गुर गोबिन्द कर प्यार। लक्ख चुरासी विचों रक्खण आया, निहकलंकी जामा धार। सतिजुग साचा मार्ग दस्सण आया, सोहँ शब्द सच्चा जैकार। लस्सी विचों मक्खण वरोलण आया, नाम मधाणा एका डार। घर घर अंदर डूंघी कंदर फोलण आया, काया कण्पड़ खोल बन्द किवाड़। गुरमुखां अंदर आपे बह बह बोलण आया, नाद सुणाए सच्ची धुंनकार। धुर दी प्रीत गुरमुखां उतों घोल घोली घोलण आया, निरगुण सरगुण कर प्यार। काया चोली आप बदलावण आया, रंग रंगीला देवे चाढ़। गुरमुख जुग जुग विछड़े मेल मिलावण आया, कल कलकी लै अवतार। सम्मत सतारां एका ढोला गावण आया, उच्ची कूक करे पुकार। चार वरनां लोकमात वरोलण आया, ख़ाकी ख़ाक पावे सार। शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश आपणे कंडे तोलण आया, ऊँच नीच करे विचार। राज राजान शाह सुल्तान जगत ख़ज़ीना फोलण आया, माया राणी आए हार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तम करे खुआर। (०६—८१८ ८१६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

की निहकलंक प्रभ तेरा नाम, सच दे समझाईआ। पुरख अबिनाशी करे खेल तमाम, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। जन भगतां देवां नाम जाम, प्याला अमृत इक्क वखाईआ। सांतक सति कर के नगर गराम, काया खेड़ा वज्जे वधाईआ। झगढ़ा चुक्के अंदर तमाम, तमा रोग ना कोई सताईआ। चरन कँवल दवार वखावां सच हमाम, अशनान इक्को इक्क कराईआ। लक्ख चुरासी दा रहे ना कोई गुलाम, बन्दीखाना दिआं तुड़ाईआ। धुर दा ढोला दस्स कलाम, कायनात विच्चों बाहर कढ़ाईआ। महिबूब बण के सच अमाम, आमद आपणी दिआं समझाईआ। कलिजुग मेट अन्धेरी शाम, शमां भगतां दिआं जगाईआ। सच दवारे दे के माण, ममता मोह दिआं मिटाईआ । बिन सद्दिआ पुच्छयां पिच्छों अग्गे मिलां आण, अगला आपणा रंग वखाईआ। बिन किरपा करे ना कोई पछाण, पशचाताप सर्ब लोकाईआ। निहकलंक जोत धार नाम रक्ख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शैतान सारे दिआं मिटाईआ। (१६—४०५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

कलिजुग अन्तम रूप अगम्म, सो पुरख निरञ्जण आप धराईआ। ना मरे ना पए जम्म, हरख़ सोग ना कोई रखाईआ। ना खुशी ना कोई ग़म, चिन्ता रूप ना कोई वटाईआ। बुध मत ना कोई मन, पंज तत ना कोई रखाईआ। हत्थ मूंह ना नक्क कन्न, पैरीं चल ना पन्ध मुकाईआ । मात पित ना जननी जन, साक सज्जण सैण ना कोई जमाईआ। माल ख़ज़ाना ना कोई धन, दौलत हत्थ ना कोई रखाईआ। ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, मन्दर मठ ना कोई बणाईआ। ना कोई घड़े ना देवे भन्न, ना कोई सके डंन लगाईआ। ना कोई करे खंन खंन, ना कोई वंडन वंड वंडाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलिजुग

अन्तम निरगुण चढ़े साचा चन्न, जगत अन्धेरा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा आप उठाईआ।

कलिजुग पर्दा चुक्कणा, कल कलकी लै अवतार। चारों कुण्ट सिँघ शेर हो हो बुक्कणा, पुरख अबिनाशी खेल अपार। शब्द अगम्मी हो हो उठणा, नव नौं करे जैकार। जूठा झूठा धन सभ दा लुट्टणा, रहण ना पाए विच्च संसार। माया ममता बूटा सुक्कणा, जल सिंच ना करे कोई प्यार। काम क्रोध फड़ फड़ कुट्टणा, शब्द खण्डा एका मार। जन भगतां उप्पर आपे तुट्ठणा, देवे दरस दरस दीदार। अमृत जाम प्याए घुट्टना, काया करे ठंडी ठार। लक्ख चुरासी फड़ फड़ कुसणा, एका मारे मारनहारा मार। राए धर्म सभ नूं पुच्छणा, क्यों भुलया हरि निरँकार। हरि का तीर निशाना कदे ना उकणा, गोबिन्द चिल्ले रिहा चाढ़। बीस अठारां एका चुक्कणा, दो जहानां मारे मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, आपणा नाउँ रक्खे निहकलंक नरायण नर अवतार।

रक्खया नाउँ निहकलंक, नानक गोबिन्द गए जस गाईआ। वेद व्यासा वेखे अन्त, पारब्रह्म दए वखाईआ। ईसा मेले साचा कन्त, बैठा ओट तकाईआ। मुहम्मद चौदां सदीआं गणे गणत, लिख लिख लेखा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ करे रुशनाईआ।

निहकलंक नाउँ सुल्ताना, सो पुरख निरञ्जण आप रखाइंदा। जोधा सूरबीर बली बलवाना, बावन आपणा रूप धराइंदा। रामा राम राम मरदाना, रावण गढ़ हँकार तुड़ाइंदा। काहना कृष्न कृष्न प्रधाना, रथ रथवाही रथ चलाइंदा। ईसा मूसा बध्धा गाना, साचा सगन मनाइंदा। हत्थीं फड़े मुहम्मद गुलामा, एका बंधन हरि हरि पाइंदा। अल्ला राणी तोड़े माणा, शब्द निशाना इक्क चलाइंदा । चारों कुण्ट वेखे मार ध्याना, दह दिशा फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा खेल खलाइंदा।

निहकलंक पुरख अबिनाशा, अबिनाशी आपणी धार चलाईआ । जोती जोत जोत प्रकाशा, प्रकाश प्रकाश रूप धराईआ। आदि जुगादि ना कदे विनासा, जुग जुग आपणी चाल चलाईआ। कलिजुग वेखे खेल तमाशा, लक्ख चुरासी नाच नचाईआ। गुरमुख विरला प्रभ मिलण दी रक्खे आसा, निज आत्म बैठा ध्यान लगाईआ। सतिगुर पूरा देवे सच भरवासा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। अमृत भरे काया कासा, सच प्याला हत्थ फड़ाईआ। निज मन्दर कर कर वासा, निज गृह दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन लए उठाईआ।

जुग जुग हरिजन मिलंना, हरि मेले बेपरवाह। शौह दरयाए बेड़ा बन्ना, बेड़ा बन्ने

बण मलाह । एका राग सुणाया कन्ना, राग अनादी धुन वजा। एका जोत चढ़ाया चन्ना, जोत निरञ्जण कर रुशना। एका पुरख अबिनाशी मन्ना, गुरमुख सच्चे लए मना। मनमुख जीव आत्म अन्ना, हरि का भेव ना सके पा। राए धर्म दए डंना, देवे डंन अन्त सज़ा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाह। (१० ५६०)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

साची विद्या हरि जू ढोला, एका आख सुणाइंदा। जिस वखाया गोबिन्द होला, सो आपणा सुत नाल रलाइंदा। निरगुण तोला नानक नाम सच दुआरा इक्को खोल्ला, हरि शब्दी सुत वसाइंदा। आपे बणया भाला भोला, दिस किसे ना आइंदा। पंज तत अंदर करया उहला, पूरन कहि कहि नाम सुणाइंदा। वेखो हरि जी खेल खेला, गोबिन्द भउ चुकाइंदा। चारों कुण्ट पैंदा रौला, हरि हरि नज़र किसे ना आइंदा। सिख कहन्दे साडे नाल कर के गिआ कौला, अन्तम कल मेल मिलाइंदा । पंडत कहन्दे ब्रह्मण गौड़ उच्चे टिल्ले परबत वस्सया उहला, आपणा पड़दा पाइंदा। मुल्ला शेख़ कहन्दे साड्डा मौला, इक्क अमाम वेस वटाइंदा । पुरख अबिनाशी कहे मैं सभ तों वसां उहला, बिन भगतां हत्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत सज्जण तेरा करे विहार, लोकमात हरि साची कार, सच दुआरा अगम्म अपार, पुरख अबिनाशी आप बणाइंदा । (११—८५१)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

गोदावरी प्रभ गोद सुलाए। अन्तम अन्त गुर गोबिन्द चरन टिकाए। वेले अन्त दसम गुर एह शब्द अलाए। आपणी जोत आपे आप, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान विच्च माझे देस धराए। गुर गोबिन्द एह शब्द लिखाया। आपणा अन्तम अन्त दिसाया। निहकलंक दी ओट रखाया।अन्तकाल कलिजुग प्रगट जोत, फतह डंक प्रभ आए वजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा होए सहाया। (२—३१)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

हरि कलकी अवतार, जोत जगाइंदा। हरि कलकी अवतार, भेख वटाइंदा। हरि कलकी अवतार, लेख लिखाइंदा। हरि कलकी अवतार, वेख वखाइंदा । हरि कलकी अवतार, गोबिन्द रूप समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलगी तोड़ा इक्क वखाइंदा।

हरि कलकी अवतार, एका एक अखवाया। खेले खेल अपार, अकल कला वरताया। गुर चेले पावे सार, सारंग धर आप हो आया। मेले मेल नाम दरबार, दर दरबारी इक्क अखवाया। सज्जण सुहेले लए तार, तारनहारा सृष्ट सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटाया।

कलगी धर हरि अवतार, जागरत जोत जगाईआ । जोत सरूपी कर उजिआर, कलिजुग रैण अन्धेरी रिहा मिटाईआ। शब्द सरूपी इक्क जैकार, चारों कुण्ट रिहा कराईआ। सतिजुग साचा वणज वपार, आप आपणा नाउँ रखवाईआ। सम्मत चौदां बन्नै धार, सति पुरख निरञ्जण हत्थ वडयाईआ। गुरमुख साचे कर प्यार, साची सिख्या रिहा सिखवाईआ। एका इकी एका वार, इक्क इकेला रिहा पाईआ। गुर गोबिन्दा बण भिखार, दर दवारा मंग मंगाईआ। कलिजुग तेरी अन्तम वार, पूरब लहणा झोली पाईआ। शब्द गैहणा तन शिंगार, अस्त्र शस्त्र वेख वखाईआ। चिट्टा असव कर त्यार, आसण सिँघासण इक्क विछाईआ। प्रगट होए शाह असवार, वाग आपणे हत्थ रखवाईआ। सचखण्डी खोलु आप दवार, लोकमाती राह तकाईआ। आपे जाणे आर पार किनार, मंझधार वेख विखवाईआ। सवेर संञ सूरज चन्न सितार, बैठे मुख छुपाईआ । आप वजाए काल नगार, एका डौरू रिहा वाहीआ। धर्म राए दर बण भिखार, बैठा सीस झुकाईआ। लाड़ी मौत कर त्यार, हत्थीं मैहन्दी रिहा लाल रंगाईआ। नैण कज्जल पाया भार, सीस मैंढी रिहा गुंदाईआ। नार कन्नया होई मुटिआर, वर ढूंडे सृष्ट सबाईआ। लक्ख चुरासी वेखे कन्त भतार, कवण हाणीआं हाण मिलाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत सुहाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूंघी कंदर फेरा पाईआ। धरत मात तेरा वेख अखाड़, सूरबीरां राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलगी धर आप अखवाईआ।

कलगी धर हरि जगदीसा, जगत जोग वखाइंदा। खेले खेल बीस इकीसा, राग छतीसा मेट मिटाइंदा। ना कोई कुरान अंज़ील हदीसा, ना कोई सबक पढ़ाइंदा। राज राजान ना कोई छत्र रक्खे सीसा, तख्त ताज ना कोई हंढाइंदा। लिखया लेख चुक्के विच उनीसा, अहिनल हक़ प्रभ झोली पाइंदा। (१७ हाढ़ २०१५ )

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक विच्च मात जोत सरूपी जामा पाया। अन्तम अन्त आप करावणा। आप आपणा भेख मिटावणा। निहकलंक प्रभ नाम रखावणा। जोत सरूपी विच्च मात कर्म कमावणा। मेट मिटाए आप खपाए अंज़ील कुरान अन्तम जुग रहण ना पाए, माण गवाए वेद पुराना। सतिजुग साचा मार्ग लाए, बेमुख खपाए गुरसिख उपजाए, सोहँ साचा शब्द वरतावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म विच्च मात आप करावणा।

आपणा कर्म आप कराए। जुगो जुग प्रभ जोत प्रगटाए। मात पताल अकाश सद रहाए। जोत सरूपी सर्ब समाए। वड वड भूपी प्रभ आप अखवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कल जामा पाए।

निहकलंक जोत निरँकार। निहकलंक इक्क करतार। निहकलंक आप अधार। निहकलंक

जोत सरूप जुगो जुग विच्च मात लए अवतार। निहकलंक जोत निरँकारा। निहकलंक रूप अपारा। निहकलंक राम अवतारा। निहकलंक जोत गिरधारा। निहकलंक सर्ब अधारा। निहकलंक जुगो जुग प्रगट जोत विच्च मात लए अवतारा।

निहकलंक जोत अकारे। निहकलंक सद निराहारे। निहकलंक आप मुरारे। निहकलंक कृष्न मुरारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग अन्तम जुग जामा विच्च मात दे धारे।

निहकलंक एका अंक। निहकलंक एका डंक। निहकलंक जोत अटंक। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए हरस मिटाए आप कढाए आत्म शंक। (१५ सावण २००६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क जपाए इक्क कराए इक्क धराए इक्क वरताए एका एक एक हो जाए। दूसर कोई रहण ना पाए। राओ रंक इक्क थां बहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंक निह कल नाउँ रखाए।

निहकलंक निहकलंक निहकलंक अगन मेंह। सृष्ट सृष्ट सृष्ट सर्ब थेह। कलिजुग जीव होए खेह। इस हत्थ दे इस हत्थ ले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन काम आप करे। (१५ सावण २००६ बि)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

निहकलंक तेरा दर। निहकलंक साचा घर। निहकलंक जोत हरि। निहकलंक गुरमुख मंगण तेरा दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मसतूआणा उपजावे साचा सर।
(१५ सावण २००६ बि)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

ईशर जोत जगत में आए, जुगो जुग एह खेल रचाइओ। ईशर जोत जगत में आए, जुग जुग वेस वटाइओ। ईशर जोत जगत में आए, सरगुण निरगुण माहि उपाइओ। ईशर जोत जगत में आए, पाताल आकाश मात बणाइओ। ईशर जोत जगत में आए, आकार दातार ब्रह्मा प्रगटइओ। ईशर जोत जगत में आए, शिव शंकर देह पलटाइओ। ईशर जोत जगत में आए, मोहणी रूप हो शिव भुलाइओ। ईशर जोत जगत में आए, जुग प्रमाण पाए माइओ। ईशर जोत जगत में आए, त्रेते राम रघुबंस अखवाइओ । ईशर जोत जगत में आए, दे सखी दान दवापर जोत प्रगटाइओ। ईशर जोत जगत में आए, दवापर कृष्न मुरार अखवाइओ। ईशर जोत जगत में आए, पा माया सभ जगत भुलाइओ। ईशर जोत

जगत में आए, कलिजुग कार करन प्रभ बिगसाइओ। ईशर जोत जगत में आए, घनकपुरी नूं भाग लगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, प्रगट हो निरँकार निहकलंक अखवाइओ। ईशर जोत जगत में आए, महाराज शेर सिँघ नाम धराइओ।

ईशर जोत जगत में आए, छड्ड देह प्रभ जोत प्रगटाइओ। ईशर जोत जगत में आए, जुगो जुग एह खेल रचाइओ। ईशर जोत जगत में आए, लजिआ रक्खण भगत दी नाउँ अनेक रखवाइओ। ईशर जोत जगत में आए, बाल अवसथा धरू तराइओ। ईशर जोत जगत में आए, लज्जया रक्खे प्रहिलाद, नर सिँघ नरायण अखवाइओ। ईशर जोत जगत में आए, होए बावन रूप घर जाए बल तराइओ। ईशर जोत जगत में आए, लज्जया रक्खे अमरीक चक्कर सुदर्शन बाण चलाइओ । ईशर जोत जगत में आए, दे के नाम ज्ञान जनक भगत तराइओ । ईशर जोत जगत में आए, जोड़ी जोड़ खड़ाउँ हरी चन्द समझाइओ। ईशर जोत जगत में आए, भगत बिदर घर भोग लगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, सुदामा दलिद्री गले लगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, नाम दिउ दे छप्पर छाइओ। ईशर जोत जगत में आए, जै दिउ दे लेख लिखाइओ। ईशर जोत जगत में आए, गुरमुख बैणी भगत तराइओ। ईशर जोत जगत में आए, रविदास चुमार आ दरस दिखाइओ। ईशर जोत जगत में आए, सदना तार कसाई सैण रूप दरसाइओ। ईशर जोत जगत में आए, दे के आपणा नाम भगत कबीर तराइओ। ईशर जोत जगत में आए, दरोपती लज्जया आण रखवाइओ। ईशर जोत जगत में आए, बिन भगतां किसे दरस ना पाइओ। ईशर जोत जगत में आए, हो प्रतक्ख धन्ने का भोग लगाइओ । ईशर जोत जगत में आए, सो जाणे जिस आप बुझाइओ। ईशर जोत जगत में आए, भगत तरलोचन दरस दिखाइओ। ईशर जोत जगत में आए, गनका पापण नाम दिवाइओ। ईशर जोत जगत में आए, पापण पूतना देह छुडाइओ। ईशर जोत जगत में आए, बधक मारे बाण कृष्न गले लगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, कलिजुग आ के खेल रचाइओ । ईशर जोत जगत में आए, ईसा मूसा मुहम्मद उपजाइओ। ईशर जोत जगत में आए, दस अवतार इक्क जोत जगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, आपणा बल प्रभ आप रखवाइओ। ईशर जोत जगत में आए, जामा धार शेर सिँघ कहाइओ ।

ईशर जोत जगत में आए, भगत जनां नूं आण तराइओ। ईशर जोत जगत में आए, तारे बहौल सिँघ जिन सीस उठाइओ। ईशर जोत जगत में आए, तारे सिख गुजर सिँघ सेव कमाइओ। ईशर जोत जगत में आए, हो चतरभुज आपणा नाम कहाइओ। ईशर जोत जगत में आए, सोहँ शब्द नाम दवाइओ। ईशर जोत जगत में आए, ज्ञान जोत माहणा सिँघ विच्च जगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, होए कृष्न मुरार पाल सिँघ दरस दिखाइओ। ईशर जोत जगत में आए, तारे सभ प्रवार जिंन गुर सेव कमाइओ। ईशर जोत जगत में आए, तारया बुद्ध सिँघ आण बाले चक्क धाम बणाइओ। ईशर जोत जगत में आए, करे खेल अपार किसे भेव ना पाइओ। ईशर जोत जगत में आए, दित्ता आप माण अमर अमरापद पाइओ। ईशर जोत जगत में आए, सत्त जेठ सवरन सिँघ सचखण्ड सिधाइओ।

ईशर जोत जगत में आए, तज्जिआ धरू दित्ता उतार सिख दर अग्गे बहाइओ। ईशर जोत जगत में आए, कोई ना जाणे सार, महाराज शेर सिँघ शब्द लिखवाइओ।

ईशर जोत जगत में आए, जोत सरूप विच्च देह समाइओ। ईशर जोत जगत में आए, जोत निरञ्जण विच्च जगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, माणस देह दे विच्च समाइओ। ईशर जोत जगत में आए, बिन देह तों निहकलंक अखवाइओ।

ईशर जोत जगत में आए, तारे सिख अपार वछड़े चरन लगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, लज्जया रक्ख प्रभ आप भगतन दी लाज रखवाइओ। ईशर जोत जगत में आए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अखवाइओ।

ईशर जोत जगत में आए, देख देह अपार जोत अगम्म जगाइओ । ईशर जोत जगत में आए, ऐसा दरस अपार देह डगमगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, विच्च हो के सिख अडोल, सारा जगत भुलाइओ। ईशर जोत जगत में आए, आप बैठ सोहे विच्च संगत, चार कुण्ट प्रभ अगन लगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, बह के आप अतोल झूठा जगत तुलाइओ। ईशर जोत जगत में आए, अन्त काल कल आण तराइओ। ईशर जोत जगत में आए, बाहों पकड़ जन भगत तराइओ। ईशर जोत जगत में आए, सुत्ते सिख अनभोल महाराज शेर सिँघ घर माहि आइओ।

ईशर जोत जगत में आए, देवे शब्द अनमोल सोहँ जाप जपाइओ। ईशर जोत जगत में आए, गुण निधान आ घर सिखां दे लेख लिखाइओ। ईशर जोत जगत में आए, टुट्टी गंढुणहार प्रभ टुट्टी गंढ़े आप भजन सिँघ फेर जिवाइओ। ईशर जोत जगत में आए, अमृत बरखा ला भजन दे मुख चवाइओ। ईशर जोत जगत में आए, कट्टे हउमे रोग, जान विच्च जोत जगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, आप ब्रह्म सरूप सिख ब्रह्म सरूप बणाइओ। ईशर जोत जगत में आए, दे के शब्द ज्ञान सोहँ जहाज बणाइओ। ईशर जोत जगत में आए, कल कीती किरपा अपार, गुरसिखां चरन लगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, अंधिआर कल में भारी गुरसिखां मन गुर ज्ञान दवाइओ। ईशर जोत जगत में आए, कलू जीव होए खुआर गुरमुखां गुर आण तराइओ। ईशर जोत जगत में आए, भगत जनां नूं चरनीं लाया, बेमुखां तों मुख छुपाइओ। ईशर जोत जगत में आए, देवे दरस अपार दुःख कलेश गवाइओ। ईशर जोत जगत में आए, दिते सिख उधार महाराज शेर सिँघ नाम रखवाइओ।

ईशर जोत जगत में आए, गुर संगत गुर माण दिवाइओ। ईशर जोत जगत में आए, दरगाह होए परवान जिनूं मेरा हरि जस गाइओ। ईशर जोत जगत में आए, तिनूं विटूह कुरबान जिनूं गुर चरनीं सीस झुकाइओ। ईशर जोत जगत में आए, दे दरस अपार दर आए तराइओ। ईशर जोत जगत में आए, करे खेल अचरज दीपक जोत जगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, तिनूं ना मिले ठाउँ जिनूं सौं के वक्त विहाइओ। ईशर जोत जगत में आए, महाराज शेर सिँघ सद मेहरवान तज देह जोत प्रगटाइओ।

ईशर जोत जगत में आए, सतिजुग सति सति सति वरताइओ। ईशर जोत जगत में आए, आप अखण्ड सच राह बताइओ। ईशर जोत जगत में आए, जगाए जोत अपार शेर सिँघ नाम धराइओ। ईशर जोत जगत में आए, दे के ब्रह्म ज्ञान गुरसिख तराइओ। ईशर जोत जगत में आए, ब्रह्मा विष्न महेश सभ कोल बहाइओ। ईशर जोत जगत में आए, तेतीस करोड़ खड़े दर सीस झुकाइओ। ईशर जोत जगत में आए, गुरसिखां गुर पकड़ चरन लगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, देवे दरगाह माण गुरसिख बैकुण्ठ सिधाइओ। ईशर जोत जगत में आए, कर के सेवा अपार जन्म मरन दा फंद मुकाइओ। ईशर जोत जगत में आए, देवे सिख आ तार चुरासी गेड़ कटाइओ। ईशर जोत जगत में आए, घर आ के देव माण सिखां दी लाज रखाइओ। ईशर जोत जगत में आए, कल विच्च भगत लए पछाण महाराज शेर सिँघ नाम धराइओ।

ईशर जोत जगत में आए, कल विच्च लए अवतार सतिजुग आण लगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, देवे जीव उधार सोहँ शब्द सुणाएओ। ईशर जोत जगत में आए, निमाणयां देवे माण गरीबां नूं गले लगाइओ। ईशर जोत जगत में आए, हँकारी दिते निवार राणयां नूं फड़ तख़तों लाहिओ। ईशर जोत जगत में आए, चार वरन कर इक्क बहाइओ। ईशर जोत जगत में आए, आप है ब्रह्म सरूप, जीव ब्रह्म सरूप उपाइओ। ईशर जोत जगत में आए, जोत सर्ब जीव इक्क रंग समाइओ। ईशर जोत जगत में आए, आप एका नाउँ इक्क शब्द सुणाएओ। ईशर जोत जगत में आए, दे के सोहँ ज्ञान सतिजुग राह बताइओ। ईशर जोत जगत में आए, घर देवे दरस सुजान बाहों पकड़ गुरसिख आण तराइओ। ईशर जोत जगत में आए, प्रगट होए मुरार, महाराज शेर सिँघ नाम रखाइओ। (२४ विसाख २००७)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

निहकलंक हो जोत सरूपा। निहकलंक आप वड भूपा। निहकलंक प्रगटे अन्ध कूपा। निहकलंक किसे नज़र ना आवे, जोत सरूप प्रभ जोत सरूपा। निहकलंक जग ला के सृष्ट जले जिउँ पंज जेठ की धूपा। निहकलंक नरायण नर आया, ईशर जोत सरूप प्रभ जोत सरूपा। निहकलंक रूप है अगम्म, अगम्म अगोचर प्रभ अनेक सरूपा। निहकलंक सृष्ट करे भंग, महाराज शेर प्रगटिओ कल सति सरूपा। (१ कत्तक २००७)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

निहकलंक तेरी वड्डिआई। निरञ्जण जोत विच्च मात टिकाई। प्रभ अबिनाशी जगत रघुराई। सर्ब घट वासी अचरज खेल रचाई। कलिजुग कल धार, दुनियां सुंञ मसाण सुआई। महाराज शेर सिँघ कल लै अवतार, गुरसिखां घर जै जै जैकार कराई।
(५ जेठ २००८ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

जामा लिआ धार, निहकलंक घनकपुरी प्रभ भाग लगाई। मनी सिँघ पाई सार, दर आए दरस पाए पल्ला फेर जगत पए दुहाई। अमृतसर लिआए मंजी साहिब उप्पर बहाई। बेमुखां तों धक्के खाए, अमृतसर सराफ दवाई।

कलिजुग ऐसी कल वरतावे, प्रभ अबिनाशी ऐसी खेल रचावे, सर अमृत थेह हो जाई। साची लिखत प्रभ आप लिखाई। महाराज शेर सिँघ तेरी जगत वड्डिआई।

मनी सिँघ ने शब्द कमाया। निहकलंक नरायण नर अवतार, उप्पर सीस उठाया। अनन्दपुर जाए, हाहाकार कर आख सुणाया। नीला चोगा सति रंग रंगाया। प्रभ साचे दे गल विच्च पाया। अमाम मैहन्दी रसना नाम अलाया। मुस्लमानां दे दुहाई, साचे सन्तां आख सुणाया। कलिजुग प्रभ जोत प्रगटाई। भरम भुलेखे सभ सिशट भुलाई। विछड़यां गुरसिखां निहकलंक कलिजुग साचे मेल मिलाई। गुरसिख गुर दर आया, कर दरस अमरा पद पाया, साचा प्रभ भए सहाई। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, सरन पड़े दी लाज रखाई। (५ जेठ२००८)

आपणी देह आप तजाई। गुरसिख साचे तेरी काया जोत जगाई। सृष्ट सबाई दए दुहाई, निहकलंक प्रगट होया केहड़े थाईं। केहड़ा देस केहड़ा वेस, ना कोई जाणे ना पछाणे, पुच्छदे फिरन जादिआं राही। साध सन्त ना मिले कन्त, ना फड़दा कोई बाहीं। कलिजुग माया पाई बेअन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिसे किसे नाही।

आपणी काया दित्ती तज। सिँघ पूरन विच वड़िआ भज्ज। गुरमुखां पड़दे रिहा कज्ज। अमृत प्याए रज्ज रज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ प्रगट होए विच मैदाना पए गज्ज।

काया छड्डया झूठा चोला। गुरसिख तेरी आत्म हरि जी मवला। सृष्ट सबाई उतों कीता परदा उहला। एह काया झूठी जीवां जंतां दिसे, एह पाया रोल घचोला। सृष्ट सबाई खिड़ खिड़ हस्से, राह आपणा ना किसे दस्से, गुरसिख साचे चरन बहा के आप बणाए भोले भाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरे तोल आपे तोले। (१३ चेत २०११ बि)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

निहकलंक भारत प्रभ साचा भूप। चार वरन परोए इक्क सूत। धरती मात वरन चार वर दे कराए दे इक्क पूत। महाराज शेर सिँघ जामा धार जोत निहकलंक बिन रूप।

रूप ना दीसे निहकलंक, वरते विच्च संसार। रूप ना दीसे निहकलंक, सोहँ शब्द कराए जै जै जैकार। रूप ना दीसे निहकलंक, शब्द लिखावे अगम्म अपार। रूप ना दीसे

निहकलंक, गुरमुख देवे दरस अपार। रूप ना दीसे निहकलंक, कल आया धर जोत अपार। रूप ना दीसे निहकलंक, झूठी माया पाई संसार। रूप ना दीसे निहकलंक, रसना लग्गा मदि मास अहार। रूप ना दीसे निहकलंक, कर्म धर्म जीव दोवें दित्ते हार। रूप ना दीसे निहकलंक, ना दीसे तेरा सच दरबार। सतिजुग छत्तर झुल्ले तेरे सीसे, गुरसिखां देवे चरन प्यार।

जगाई जोत निहकलंक, जगत जलाया। जगाई जोत निहकलंक, शब्द डंक लगाया। जगाई जोत निहकलंक, चार कुण्ट टुंब उठाया। जगाई जोत निहकलंक, दुःख भुक्ख जगत जीव दुःखदाया। जोत जगाई निहकलंक, सुख कल जीव सर्ब मिटाया। जोत जगाई निहकलंक, चार कुण्ट वहीर चलाया। जोत जगाई निहकलंक, राओ रंक इक्क कराया। जोत जगाई निहकलंक, ऊँच नीच कोई दिस ना आया । जोत जगाई निहकलंक, वरन चार इक्क धाम बहाया। जोत जगाई निहकलंक, सोहँ साचा शब्द चलाया। जोत जगाई निहकलंक, उनंजा पवण सिर छत्तर झुलाया। जोत जगाई निहकलंक, करोड़ तेतीस चरन बहाया। जोत जगाई निहकलंक, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ शरन तकाया। जोत जगाई निहकलंक, बीर बैताल कोई दिस ना आया। जोत जगाई निहकलंक, हाकन डाकन सिर मुंडवाया। जोत जगाई निहकलंक, चार कुण्ट मरदंग वजाया। जोत जगाई निहकलंक, बीर मुहम्मद वस कराया। जोत जगाई निहकलंक, कुरान अंज़ील दे मिटाया। जोत जगाई निहकलंक, र्स्वथ तीरथां जोत खिचाया। जोत जगाई निहकलंक, कोई दूसर रहण ना पाया। जोत जगाई निहकलंक, पूजा पाठ कलिजुग सभ मिटाया। जोत जगाई निहकलंक, अन्तकाल कलिजुग कोई दूसर दिस ना आया। जोत जगाई निहकलंक, सच आपणा आप वरताया। जोत जगाई निहकलंक, साचा नाम सतिजुग राह दिसाया। जोत जगाई निहकलंक, सतिगुर मनी सिँघ सतिजुग उपजाया। जोत जगाई निहकलंक, सिर साचा छत्तर झुलाया। जोत जगाई निहकलंक, राजा राणा सभ शरनी लाया। जोत जगाई निहकलंक, महाराज शेर सिँघ नाउँ धराया।

कर जोत अकार निहकलंक प्रकाशया। करे जोत प्रकाश, कल सृष्ट करे सभ नासया। करे जोत प्रकाश, करे सभ राओ दासन दासया। करे जोत प्रकाश निहकलंक, साचा शब्द चलावे प्रभ अबिनासया। करे जोत प्रकाश निहकलंक, साध संगत करे प्रभ निवासया। करे जोत प्रकाश निहकलंक, महाराज शेर सिँघ आए जग कर दरस सर्ब दुःख नासया।

धरी जोत प्रभ जगत गम्भीर। धरी जोत निहकलंक, गुरसिख पूरन सति सति सरीर। धरी जोत निहकलंक, सोहँ शब्द रसन चलाए तीर । धरी जोत निहकलंक, बेमुख ना बन्नूण धीर। धरी जोत निहकलंक, विच्च हउमे लाई पीड़। धरी जोत निहकलंक, बेमुख दित्ते रुला लथ्थे चीर। धरी जोत निहकलंक, करे कलिजुग अख़ीर। धरी जोत निहकलंक, गुरमुखां करे शांत सरीर। धरी जोत निहकलंक, होए सहाई वेले भीड़। धरी जोत निहकलंक, वड पीरां पीर। धरी जोत निहकलंक, महाराज शेर सिँघ गुणी गहीर।

साचा जामा निहकलंक, झूठी दुनियां जाए मच्च। साचा जामा निहकलंक, बेमुख कल कंचन कच्च। साचा जामा निहकलंक, झूठे राज घर दिसण कच्च। साचा जामा निहकलंक, जोत सरूप प्रगट गुरसिखां गिआ रच। महाराज शेर सिँघ साचा शब्द तेरा, तेरे बचन लिखाए सच्च।

सच बचन तेरा निहकलंक, आप सदा अडोल। साचा बचन तेरा निहकलंक, सद आप अतोल। सति बचन तेरा निहकलंक, दुनियां सोई रही अनभोल। साचा बचन तेरा निहकलंक, कलिजुग तोले पूरे तोल। साचा बचन तेरा निहकलंक, बेमुख जीव सौं रहे कोल। साचा बचन तेरा निहकलंक, अन्तकाल कलिजुग देवे भुलेखा खोल्। साचा जाप तेरा निहकलंक, सच शब्द वजावे ढोल। साचा जामा तेरा निहकलंक, सर्ब सृष्ट रिहा कल मौल। साचा जामा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान निहकलंक उप्पर धौल।

धर जोत निहकलंक, जगत डुलाया। धर जोत निहकलंक, राओ रंक भुलाया। धर जोत निहकलंक, बेमुखां मन हँकार वसाया। धर जोत निहकलंक, क्रोध चंडाल विच्च धराया। धर जोत निहकलंक, अगन जोत बेमुखां हिरदा जलाया। धर जोत निहकलंक, उलटे गेड़ कलिजुग भवाया। धर जोत निहकलंक, रणभूमी इक्क खेल रचाया। प्रगट जोत निहकलंक, वेखे खेल आप रघुराया। धर जोत निहकलंक, चंड परचंड प्रभ तेज वधाया। धर जोत निहकलंक, झूठा ठूठा कलिजुग भन्न वखाया। धर जोत निहकलंक, सतिजुग साचा लाया। धर जोत निहकलंक, गुरमुखां आत्म ब्रह्म ज्ञान दवाया। धर जोत निहकलंक, निरहारी निरवैर समाया। धर जोत निहकलंक, गुरसिखां साचा राह दिखाया। धर जोत निहकलंक, जन भगत जामे बहत्तर लिखत कराया। धर जोत निहकलंक, राजा राणा सभ तख्तों लाहिआ। धर जोत निहकलंक, एका शब्द एका सुरत चलाया। धर जोत निहकलंक, पतिपरमेश्वर विच्च कलिजुग आया। धर जोत निहकलंक, भगत वछल नाथ त्रैलोकी नाउँ नरायण प्रभ नाम रखाया।

प्रगटे जोत निहकलंक, शब्द रसन अन्तकाल कलिजुग आप प्रभ चलाया। प्रगट जोत निहकलंक, बेमुखां हिरदा नष्ट कराया। प्रगट जोत निहकलंक, चार कुण्ट अन्धेर कराया। प्रगटे जोत निहकलंक, आपणा भाणा आप वरताया। प्रगटे जोत निहकलंक, त्रैभवन धनी जगत हिलाया। प्रगटे जोत निहकलंक, कलिजुग जामा धार महाराज शेर सिँघ नाम धराया। (६ सावण २००८)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

जिस नूं कहण गुरू महाराज, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सोभा पाइंदा। जिस दा दो जहानां सच्चा राज, शाह पातशाह भूपत भूप इक्क अखवाइंदा। जिस दा अगम्म अथाह डूंघा राज़, भेव अभेद ना कोई खुलायंदा। जिस दे घर गुर अवतार पीर पैगम्बर सर्ब

मुहताज, वस्त अमोलक इक्क वरताइंदा। जिस दे सीस सति सतिवादी सच्चा ताज, तख्त निवासी नाम रखवाइंदा। जिस दा लक्ख चुरासी घट घट अंदर वास, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लो आपणी कार कमाइंदा । सो सतिगुर साहिब सच दवार करे निवास, जिस दा छप्पर छन्न ना कोई छुहाइंदा। सूरज चन्द ना कोई प्रकाश , मण्डल मंडप नज़र कोई ना आइंदा। लेखा दिसे ना पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर ना सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्ह़ाइंदा।

जिस नूं कहण गुरू महाराज, सचखण्ड निवासी बेपरवाहीआ। जिस दी सच सति अमोलक दात, नित नवित्त रिहा वरताईआ। जिस दी बोध अगाध गाथ, शास्त्र सिमरत वेद पुरान रहे जस गाईआ। जिस दा खेल अलक्खना लाख, अलक्ख अगोचर वड्डी वडयाईआ। जिस दा सच दवारे सच निवास, महल्ल अट्टल चार दीवार ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वडयाईआ।

सच महाराज पुरख अकाल, अकल कलधारी इक्क अखवाइंदा। सचखण्ड निवासी दीन दयाल, दया निध ठाकुर आपणी दया कमाइंदा। सुत दुलारा जनणी जन बणके जणे लाल, पूत सपूता आप प्रगटाइंदा। साचा बख्श इक्क सथान, भूमिका धुर दी आप समझाइंदा। थिर घर खोल्ह़ दर मकान, मेहरवान मिहबान आपणा पड़दा लाहिंदा। शब्द गुरू कर बलवान, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाइंदा।

सुत दुलारा शब्दी गुर, परम पुरख आप प्रगटाईआ। निरगुण धार जोती जुड़, मेल मिलावा आपणे नाल रखवाईआ। सति सतिवादी आपणी पूरी करे लोड़, जोड़ा धुर दा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर एका दए जणाईआ।

सच महाराज सच्चा शहनशाह, पुरख अबिनाशी इक्क अखवाइंदा। तख़त निवासी बेपरवाह, बेअन्त आपणी कार कमाइंदा। शब्द अगम्मी एका जग्ह़ा, सच दवारा इक्क वसाइंदा। चरन कँवल दए टिका, थिर घर रक्ख नाउँ आप समझाइंदा। सद वसेरा आप करा, नेरन नेरा दर सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ल इक्क वडिआइंदा।

शब्दी गुर प्रभ चरन निवास, थिर घर माण वडयाईआ। सो पुरख निरगुण खेल तमाश, हरि पुरख निरञ्जण वेख वखाईआ। एकँकार देवे दात, आदि निरञ्जण खुशी मनाईआ। अबिनाशी करता करके वास, श्री भगवान परदा दए उठाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सर्ब गुणतास, निरगुण निरवैर नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक्क दरसाईआ।

शब्द गुर सच दवार, थिर घर मन्दर इक्क बणाईआ। दीआ बाती कमलापाती कर उजिआर, जोती जोत करे रुशनाईआ। दिवस राती ना कोई विहार, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। रुत्ती रुत्त ना कोई थित वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच घर इक्क वसाईआ।

शब्दी गुर घर अगम्म, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। ना मरे ना पए जम्म, जीवण जुगत ना कोई वडयाईआ। आदि जुगादि जुग नित नवित्त सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी करे आपणा कम्म, हरि करता साची कार लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निवास इक्क वखाईआ।

सच निवास पुरख अकाल सरन, पुरखोतम देवणहार वडयाईआ। नेत्र खोलु आपणा हरन फरन, निज नैण करे रुशनाईआ। मंज़ल पौड़े इक्को चढ़न, पान्धी पन्ध ना कोई वडयाईआ। धुर दा ढोला सोहला इक्को पढ़न, बिन अक्खरां राग अलाईआ। सुत दुलारे साचे वड़न, महल्ल अट्टल उच्च मनार वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा सच घर, गुर मन्दर इक्क समझाईआ।

गुर शब्द कहे मेरा सच टिकाणा, सति पुरख निरञ्जण आप बणाईआ। जिस नूं समझ ना सके कोई चतर सुघड़ सिआणा, मन मत बुध भेव ना राईआ। पुज्ज ना सके बिबाणा, पौण उनंजा सीस झुकाईआ। माण ना रहे कोई राणा, राज राजान शाह सुल्तान देण दुहाईआ। किरपा कर बख्शिश करे श्री भगवाना, भगवन आपणी दया कमाईआ। महल्ल अट्टल इक्क सुहाना, सच दवार करी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच गृह घर सति निवास, आप कराए पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता वड वडयाईआ।

निहकलंक हरि निरँकार, निरगुण वड्डा वड वडयाईआ। जोती जाता जोत उजिआर, रूप रंग रेख समझ कोई ना पाईआ। शब्दी डंक विच्च संसार, वड संसारी आप वजाईआ। नानक गोबिन्द बण लिखार, वाक भविख्त गए समझाईआ। वेद व्यासा कर पुकार, उच्ची कूक कूक अलाईआ। ईसा वाजां गिआ मार, मेरा पिता भज्जा आवे वाहो दाहीआ। मुहम्मद नैण रिहा उठाल, चौदां तबकां ध्यान परे लगाईआ। परवरदिगार सांझा यार, जलवा नूर करे रुशनाईआ । शास्त्र सिमरत वेद पुरान रहे पुकार, खाणी बाणी रही समझाईआ। कागज कलम शाही गए हार, कातब बण बण आपणी कलम चलाईआ। सतिगुर शब्द निहकलंक निरवैर कलकी अवतार, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा पंडत पांधा मुलां शेख़ मसाइक समझ ना पाए जीव विच्च संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

निहकलंक हरि का रूप, हरि जू आप अखवाइंदा। जिस दा डंका चार कूट, दह

दिशा हुक्म सुणाइंदा। लेख चुकाए जूठ झूठ, माया ममता मोह मिटाइंदा। दए वड्डिआई काया पंज तत भूत, भविख्त आपणा वेख वखाइंदा। वसणहारा महल्ल अट्टल इक्क अरूज, अर्श फर्श चरनां हेठ दबाइंदा। भेव खुल्हाए आपणा दूज, जन भगतां पड़दा लाहिंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल कलकी वेस वटाइंदा।

कल कलकी जोत उजाला, निरवैर वड्डी वडयाईआ। दो जहानां बण रखवाला, ज़िमीं असमानां वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ वेखे हाला, लक्ख चुरासी खोजे थाउँ थाईंआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया त्रैगुण वेखे जगत जंजाला, पंज तत अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश पड़दा रिहा उठाईआ। सति धर्म दी सच सच्ची धरमसाला, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी इक्को इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल कलकी दए वडयाईआ।

कल कलकी निहकलंक एक, आदि पुरख नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी रक्खदे टेक, भगत भगवान ओट रखाईआ। हर घट अन्तर जो रिहा वेख, अनभव आपणा खेल रचाईआ। सम्बल वसणहारा साचे देस, साढ़े तिन्न हत्थ सोभा पाईआ। जिस नूं लभ्भदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, करोड़ तेतीसा हत्थ किसे ना आईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण सरगुण कर के भेस, वेस अव्वलड़ा इक्क वटाईआ। धुर संदेशा नर नरेशा सतिजुग सति सति देवे संदेश, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। जन भगतां गुरसिखां साचे सन्तां काया मन्दर अंदर वड़ के साचे पौड़े चढ़्ह के दस्से भेद, बजर कपाटी पड़दा पर्हे हटाईआ। सो अन्तर आत्म परमात्म लैण पेख, निज नेत्र खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा निहकलंक इक्को एक, एकंकार अखवाईआ।

पंज तत नर निहकलंक, तत्तव तत ना कोई वडयाईआ। पुरख अकाल जिस दा दो जहान साचा डंक, शब्दी शब्द राग अलाईआ। सो साहिब दयाल हो के साढ़े तिन्न हत्थ सुहाए बंक, बंक दवारी सोभा पाईआ। जिस नूं अंकड़िआं विच्च करे ना कोई अंक, बीस बीसा हरि जगदीशा शाह पातशाह इक्क अखवाईआ। चार वरन अठारां बरन शत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश दस्से सच हदीसा नाम मंत, कलमा सति साची सिख्या इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक बेपरवाहीआ।

निहकलंक श्री भगवान, जन भगतां दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी देवे दान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेख वखाइंदा। लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म बण के साचा काहन, नाम बंसरी इक्क सुणाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां मार ध्यान, जेरज अंडा खोज खुजाइंदा। जोधा सूरबीर बण बलवान, नौजवान आपणा हुक्म वरताइंदा। खड़ग खण्डा तीर कमान, शस्त्र बसतर इक्क निशान, शब्दी धार धार धार विच्चों प्रगटाइंदा।

जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर रसना जेहवा बत्ती दन्द दे के गए बिआन, कागज कलम शाही वंड वंडाइंदा। सो साहिब स्वामी पुरख निरञ्जण धुर दा दाता श्री भगवान, निहकलंक कल कलकी इक्क अखवाइंदा। (१७—२५० २५२)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

निहकलंक नाउँ धराए। निहकलंक जोत जगाए। निहकलंक जगत भुलाए। निहकलंक आपणा भेव आप छुपाए। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ रिहा डंक वजाए।

निहकलंक नाम निरबान। निहकलंक मुशकलां करे सभ आसान। निहकलंक गुणी गुण निधान। निहकलंक वड बलवान। निहकलंक मेल मिलाए भगत भगवान। निहकलंक जोत जगाए विच्च देह महान। निहकलंक एका शब्द उपजाए सुणाए कान। निहकलंक गुरमुख साचे जोत सरूपी साचा जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क कराए रंक राजान।

निहकलंक नेत्र पेख। निहकलंक प्रभ साचा वेख। निहकलंक जोत सरूपी कीआ भेख। निहकलंक जगत लिखाए साचे लेख। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई रिहा वेख। (१८ जेठ २००६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

आपणा आप आप उपाया। जोत सरूपी जोत जगाया। माया रूपी परदा पाया। वड वड भूपी प्रभ भुलाया। कल अन्ध कूपी अन्ध अन्धेर रखाया। सति सरूपी प्रभ दिस ना आया। बिन रंग रूपी गुरसिख समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप निहकलंक कल जामा पाया।

निहकलंक साचा डंक। निहकलंक एका अंक। निहकलंक सुहाए थान बंक। निहकलंक इक्क कराए राओ रंक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत प्रगटाए बैठा रहे सदा अटंक।

निहकलंक धीरज धर। निहकलंक साचा दर। निहकलंक अवतार नर। निहकलंक जन सरनी पर। निहकलंक पुचाए साचे घर। निहकलंक जोत जगाए आत्म अपर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे देवे साचा वर।

निहकलंक जन साचे वरया। निहकलंक आप प्रभ हरया। निहकलंक जोत सरूपी जामा विच्च मात दे धरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप ना जम्मे ना मरया।

निहकलंक जोत निरँकार। निहकलंक आप करतार। निहकलंक चिट्टे असव असवार। निहकलंक भगत अधार। निहकलंक वड सिकदार। निहकलंक तेरा साचा सच दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोटन कोट मंगण खड़े दवार।

निहकलंक ऊँचा दरबारा। निहकलंक ऊँचा घर बाहरा। निहकलंक ऊँच संसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरँकारा।

निहकलंक महिंमा अनूप। निहकलंक सति सरूप। निहकलंक बिन रंग रूप। निहकलंक जोत सरूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक प्रगट जोत सर्ब माण गवाए, एका छत्तर झुलाए आप वड भूपन भूप।

निहकलंक सच तेरी गाथा। निहकलंक त्रैलोकी नाथा। निहकलंक सगला साथा। निहकलंक मिटाए शंक चरन धूड़ जन लाए माथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे आप टिकाए, चरन लगाए माण दवाए, विच्च लोकमात वड्डिआए, सतिजुग साचे तेरी पत्त रखाए, रक्खे दे कर हाथा।

निहकलंक सिर हत्थ टिकाया। निहकलंक गुरसिख तराया। निहकलंक उजल मुख विच्च मात रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कल जामा पाया।

निहकलंक कीआ भेखा। सृष्ट सबाई रही भरम भुलेखा। गुरमुख साचे आए दर, साचा प्रभ विच्च मात नेत्र पेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कढाए हउमे गवाए, रिदे धिआए भउ चुकाए, सहिंसा मिटाए अंस बणाए, आप लिखाए साचा लेखा।

निहकलंक लेख लिखंता। निहकलंक पूरन भगवन्ता। निहकलंक साचे उपजाए विच्च मात गुरमुख साचे सन्ता। निहकलंक साचे सिख तेरी आप बणाए बणता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप वड चेतन्न चनता।

आपे चेतन्न आपे मन। आपे धीर धरावे जन। आपे शब्द सुणाए कन्न। गुरमुख रसना गाए धन्न धन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस तेरी आत्म जाए मन्न।

मिटाए जन सीतल तन प्रभ बेड़ा बन्नू, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा साचे धाम बहाया।

निहकलंक नर अवतार जोत अकार। निहकलंक वरते वरतावे विच्च संसार। निहकलंक जोत सरूप कलिजुग जीव ना पाइण सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जगत वरतार।

निहकलंक निहकलंक निहकलंक एका अंक। निहकलंक निहकलंक निहकलंक इक्क कराए राओ रंक। निहकलंक निहकलंक निहकलंक सुहाए थान बंक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क चलाए इक्क वरताए इक्क सरनाए इक्क रखवाए एका अंक। (१ सावण २००६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

साचे सन्त शब्द जणाया। निहकलंक दरस दिखाया। साची अंस गुरसिख उपजाया। विच्च सहँस मुख रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाल अवसथा अचरज खेल आप कराया।

सन्त मनी सिँघ शब्द जणाए। प्रभ अबिनाशी हुक्म सुणाए। गुरमुख सिँघ संग रलाए। निहकलंक सीस उठाए। सर अमृत पहुंचे जाए। दर दरबार बूझ बुझाए। आपणा घर बाहर आप सुहाए। हरि हरि हरि प्रभ हरिमन्दर आए। सन्त मनी सिँघ साचा सन्त साचा कर्म कमाए। बांहों पकड़ साचा सन्त निहकलंक मंजी साहिब उप्पर बिठाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा धाम सुहाए। (१ सावण २००६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

हरि जोत इक्क अकार है। हरि जोत सृष्ट सबाई पसर पसार है। हरि जोत तिन्नां लोकां पावे सार है। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात आई जामा धार है।

हरि जोत हरि गुण जाण। हरि जोत हरि रंग पछाण। हरि जोत विच्च मात सच निशान। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तम कल मात प्रगटाए वड बली बलवान।

हरि जोत हरि निरँकार। हरि जोत विच्च मात जोत सरूपी लिआ अवतार। हरि जोत घर साचे वसे, करे सच अकार। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला कलिजुग पावे सार।

हरि जोत हरि निराली। हरि जोत चारों कुण्ट दिसे, कोई दर घर सर ना खाली। हरि जोत नर नरायण, सृष्ट सबाई साचा माली। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच्च मात प्रगटाई कलिजुग तेरी अन्त कराए चाली।

हरि जोत हरि का वास । हरि जोत सरूपी विच्च मात पावे रास । हरि जोत

अन्तम अन्त कल बेमुखां करे नास। हरि जोत गुरमुख सन्त जनां होई रहे दासन दास। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेला अन्तम आया, सृष्ट सबाई आप कराए नास।

हरि जोत हरि की धार। हरि जोत गुरमुख साचे कर विचार। हरि जोत बेमुखां रोड़े वैहन्दी धार। हरि जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच्च मात जगाए करे रुशनाए, कलिजुग भुल्ले जीव गवार।

हरि जोत खेल अव्वलड़ा। हरि जोत हरि एका एक वसे धाम इकल्लड़ा। हरि जोत गुरमुख साचे सन्त जनां, आप फड़ाए साचा पलड़ा। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे आत्म दर दवार अग्गे खलड़ा।

हरि जोत हरि निराधार। हरि जोत करे कराए साची कार। हरि जोत मात आए जाए वारो वार। हरि जोत जोत सरूपी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कल जामा पाए नाम रखाए कलगीधर अवतार। (६ चेत २०११ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

निहकलंक हो जोत सरूपा। निहकलंक आप वड भूपा। निहकलंक प्रगटे अन्ध कूपा। निहकलंक किसे नज़र ना आवे, जोत सरूप प्रभ जोत सरूपा। निहकलंक जग ला के सृष्ट जले जिउँ पंज जेठ की धूपा। निहकलंक नरायण नर आया, ईशर जोत सरूप प्रभ जोत सरूपा।

निहकलंक रूप है अगम्म, अगम्म अगोचर प्रभ अनेक सरूपा। निहकलंक सृष्ट करे भंग, महाराज शेर प्रगटिओ कल सति सरूपा।

निहकलंक प्रभ आप अखवाए। जामा लिआ धार, घनकपुरी प्रभ भाग लगाए। कलिजुग होए खुआर, सतिजुग सति सति सति वरताए। होए शब्द गुंज़ार, सोहँ शब्द जो रसना गाए। मिले भगत भंडार, दे दरस गुरसिख तरावे। अन्त ना होए ख़वार, महाराज शेर सिँघ विच्च जोत मिलावे। (पहली कत्तक २००७ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

निहकलंक आप प्रभ निरवैरा। वक्त लै आवे देर ना लावे, सृष्ट झड़े बेर जिउँ बेरां। सिख तरावे दरस दिखावे, गुरसिख मिटे मन तेरा मेरा। बेमुख जलावे कल खपावे, बिन गुर होया जगत अन्धेरा। महाराज शेर सिँघ नज़र ना आया, नर अवतार लै पाया फेरा। (पहली कत्तक २००७ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

जग जोत जोत जगत जलावे। जगे जोत सर्ब सृष्ट रुवाले। प्रगटे जोत किसे नज़र ना आवे। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, निहकलंक जगत अखवावे। निहकलंक जोत जगाई। निहकलंक प्रभ देह तजाई। निहकलंक हो सभ सृष्ट हिलाई। निहकलंक सर्ब भेख मिटाई। निहकलंक कुण्ट चार, जै जैकार कराई। निहकलंक लै अवतार, रंग रूप ना किसे वखाई। तजी देह होए जोत सरूप, महाराज शेर सिँघ निहकलंक नाउँ रखाई।

निहकलंक आप गुण निधाना। निहकलंक आए जगत जिउँ बाना। निहकलंक विरले गुरमुख पछाना। निहकलंक तीन लोक इक्क समाना। निहकलंक अखवाए महाराज शेर सिँघ जोत विष्नूं भगवाना। (पहली कत्तक २००७ बिक्रमी)

सर्ब सूख गुर चरन दवारा। कर दरस प्रगटे जोत अपर अपारा। जुगो जुग जगत प्रभ लै अवतारा। कलिजुग जामा धारे प्रभ निरँकारा। जगत भुल्ला होए खुआर गुरसिखां प्रभ पार उतारा। बेमुखां मन सदा हँकारा। रसना चले सदा विकारा। गुरसिखां हरि मन प्यारा। उपजे ज्ञान प्रभ देवे नाम भगत भंडारा। कलिजुग जामा धार प्रगटिओ निहकलंक अवतारा। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग कीओ पार उतारा।

कलिजुग आण गुर कलिजुग कर्म विचारया। कलिजुग आण गुर जोत जगाई अपर अपारया। कलिजुग आण गुर धारे खेल रंग करतारया। कलिजुग आण गुर जोत सरूप जगत संघारया। कलिजुग आण गुर रंग इक्क हो सर्ब समाणयां। कलिजुग आण गुर सोहँ शब्द मारे बाणयां। कलिजुग आण गुर भुंने पापी भठिआले दाणयां। कलिजुग आण प्रभ होए निहकलंक एह रंग दिखाणयां। कलिजुग जामा धार महाराज शेर सिँघ जगत भुलाणयां। (१६ हाढ़ २००७ बिक्रमी )

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

कलिजुग लै अवतार, कलिजुग पार उतारया। कलिजुग लै अवतार, गुरसिखां गुर पार उतारया। कलिजुग लै अवतार, जीव जंत प्रभ कर्म विचारया। कलिजुग लै अवतार, बेमुखां गुर नरक निवारया। कलिजुग लै अवतार, गुरसिखां गुर चरन लगा लिआ। कलिजुग लै अवतार, कलू काल कलू गुर उलटा लिआ। सतिजुग लाए अपार, सतिगुर सच सुच्च वरता लिआ। मध मास जो करे अहार, तिन्नां नरक निवास दवा लिआ। गुरसिखां गुर चरन प्यार, अमृत बूंद मुख चवा लिआ। सभ दा गवाए माण, प्रभ सोहँ शब्द चला लिआ। प्रभ सरूप एक, जगत रूप अनेक वटा लिआ। जुगो जुग लै अवतार, भगत जनां प्रभ आण तरा लिआ। कलिजुग जामा धार, निहकलंक प्रभ आप अखवा लिआ। तजी देह जोत सरूप, महाराज शेर सिँघ कलिजुग उलटा लिआ। (१६ हाढ़ २००७ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

निहकलंक जिस जन जाणयां। प्रभ पूरन देवे ब्रह्म गिआनिआं। निहकलंक जिस जन पछाणयां। प्रभ देवे माण बिरधां बाल अंञाणयां। निहकलंक जो जन चले भाणयां। जोत सरूपी प्रगट जोत गुरमुख साचे सद खड़ा तेरे सरहाणयां। निहकलंक जिस जन वखाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेड़ा बन्ने सोहँ देवे वंञ मुहाणयां। (१८ जेठ २००६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

पारब्रह्म प्रभ निहकलंक, लोकमात वज्जी वधाईआ। शब्द वजाए साचा डंक, राज राजाना रिहा उठाईआ। प्रगट होया वासी पुर घनक, भुल्ल रहे ना राईआ। खेले खेल बार अनक, कलिजुग वड्डी वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निर्मल जोत करे रुशनाईआ।

वाली हिंद उठ निधान, हरि साचे जोत जगाईआ। मेट मिटाए जीव शैतान, लोकमात रहण ना पाईआ। संग रलाए मंत्री प्रधान, एका राग सुणाईआ। पन्थ खालसा होए हैरान, पंचम जेठा दए दुहाईआ। मुस्लम सुन्नी वेख अञ्जील कुरान, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। पंडत पांधे करन ध्यान, कूड़ कुड़िआरा संग रखवाईआ। मुल्ला शेख़ सर्ब कुरलाण, नेत्र नैण रहे उठाईआ। ग्रंथी पन्थी जीव जहान, पारब्रह्म भेव ना राईआ। लिखे लेख हरि शाह सुल्तान, भारत खण्ड खुशी मनाईआ। धर्म झुलाए इक्क निशान, ऊँचां नीचां इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ।

निरगुण जोत हरि प्रकाश, आपणी कल वरताइंदा। प्रगट होया शाहो शाबाश, पन्थ खालसा आप उठाइंदा। ज्ञानी ध्यानी वड विदवानी होण निरास, हरि गोबिन्द दिस ना आइंदा। नाम वस्त ना किसे पास, ढोलक छैणे जगत वजाइंदा। लेखे लग्गे ना कोई स्वास, नेत्र नैणां दरस कोई ना पाइंदा। हरि वेख वखाए पृथ्मी आकाश, वेखणहार दिस ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा डंक वजाइंदा।

डंक वजाए हरि निरँकारा, आपणी कल वरताईआ। सृष्ट सबाई करे खुआरा, कलिजुग वेला अन्तम आईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां दए हुलारा, नौं खण्ड पृथ्मी आप हिलाईआ। सत्तां दीपां पार किनारा, उच्चे टिल्ले वेख वखाईआ। अगम्म अगम्मड़ी करे कारा, अगम्मड़ी धार चलाईआ। हड्ड मास चमड़ा ना कोई पसारा, पंज तत ना कोई दिसाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, जोती जामा भेख वटाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, निरगुण हत्थ उठाईआ। सरगुण पावे साची सारा, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ।

निरगुण जोत हरि निरँकारा, हरि हरि रूप समाया। प्रगट होए विच्च संसारा, आप आपणा भेख वटाया। नानक गोबिन्द कर प्यारा, एका धार वहाया। जीव जंत ना पाए

सारा, साध सन्त होए हलकाया। भरमे भुल्ले भरम गवारा, माया पड़दा कोई ना लाहया। अगनी तत इक्क पसारा, पंज तत चलाया। त्रैगुण माया वेखे भेख नयारा, भेखाधारी भेख ना राया। आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता हरि भगवन्ता आपे जाणे आपणी कारा, जुग जुग करदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, निरगुण नूर करे रुशनाया।

निरगुण रूप हरि निरँकारा, आपणा आप उपाइंदा। आप आपणा कर पसार, वेखणहार आप हो जाइंदा। प्रगट हो चवीआं अवतार, चौदां लोकां वेख वखाइंदा। चौदां हट्टां जगत पसार, चौदां चौदां धार चलाइंदा। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, रव सस आप उठाइंदा। जीवां जंतां मारे मार, साधां सन्तां वेख वखाइंदा। गुरमुख नारी कन्ता इक्क भतार, सच सुहञ्जणी सेज हंढाइंदा। मेल मिलाए अगम्म अपार, भेव अभेदा भेव छुपाइंदा। जोत निरञ्जण कर प्यार, आदि निरञ्जण दया कमाइंदा। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, परम पुरख अखवाइंदा। अलख अलखणा अलख अलख रिहा उच्चार, दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण वेस वटाइंदा।

निरगुण वेस हरि अव्वला, आपणा आप कराया। आप वसाया सच महल्ला, सच सिँघासण आसण लाया। आपे वस्सया जला थला, पुरख अबिनाशी दया कमाया। आपे होया वला छला, अछल अछल कराया। आपे जाणे निहचल धाम अट्टला, लोकमाती वेख वखाया। आपे जोती शब्दी रला, शब्द अनादी डंक वजाया। आपे करे कराए हल्ला, नाम जैकारा आप बुलाया। आपे वस्सया डूंघी डल्ला, उच्च महल्ला आपे डेरा लाया। आपे मेटे दूई द्वैती सल्ला, आपे वंडन वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया।

निरगुण नूर आदि अबिनाशा, भेव कोई ना राया। वेखण आया जगत तमाशा, जुग जुग वेस वटाया। जोती सरूपी पावे रासा, शब्द सरूपी डंक वजाया। मात गरभ ना करया वासा, पिता पूत ना कोई रखवाया। नाम ना जपिआ स्वास स्वासा, रसना जिह्वा ना कोई हिलाया। ना कोई रखवाया सगला साथा, सगला संग ना कोई निभाया। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, ना कोई हवन कराया। ना कोई तीर्थ अठ्ठ साठा, गुर दर मन्दर अंदर मस्जिद ना डेरा लाया। धाम अगम्मड़े पारब्रह्म प्रभ आया नाठा, आप आपणा रूप वटाया। आपे गेड़नहारा उलटी लाठा, गेड़ा आपणे हत्थ रखवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा वेस वटाया।

निरगुण रूप अकल कलधारा, निरगुण वेख वखाइंदा। जोत सरूपी कर अकारा, जोती जोत समाइंदा। जोत सरूपी कर पसारा, जोती जोत वेख वखाइंदा। जोती नूर कर उजिआरा, जोत प्रकाश समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंका नाउँ धराइंदा।

निहकलंका हरि बलवाना, पारब्रह्म अखवाया। प्रगट वाली दो जहानां, आपणा नाउँ धराया। खेले खेल सृष्ट महाना, आदि जुगादि भेव ना राया। जोधा सूर बली बलवाना, तीर निशाना इक्क रखवाया। एका चिला इक्क कमाना, एका रिहा उठाया। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्याना, एका नैण खुल्लाया। नौं खण्ड पृथ्मी कर कुरबाना, सत्तां दीपां भेट मंगाया। लक्ख चुरासी बध्धा गाना, साचा सगन मनाया। पंचम जेठी कर अशनाना, आप आपणा रूप वटाया। शब्द घोड़ा कर परवाना, सोलां कलीआं आसण लाया। भेव ना पाइन वेद पुराना, खाणी बाणी दिस ना आया। खेले खेल गुण निधाना, अञ्जील कुराना वेख वखाया। बसतर शस्त्र इक्क सजाना, तन शंगार कराया। एका खण्डा पहन किरपाना, भगवत रूप वटाया। चंडी चमके नाम मैदाना, चंड परचंड वखाया। मेट मिटाए झूठ निशाना, भेख पखण्डा रहण ना पाया। जेरज अंडा वंड वंडाना, उत्भुज सेतज वेख वखाया। काया वेखे सच मकाना, पंज तत बणत बणाया। मन मत बुध होए हैराना, त्रैगुण वेस वटाया। त्रैगुण अन्तम होए हैराना, ब्रह्मा वेता संग रलाया। ब्रह्मा रो रो करे ध्याना, वेला अन्तम आया। वेद कतेब ना करे पछाना, पारब्रह्म वड्डी वडयाईआ। शिव शंकर मारे इक्क तराना, त्रिसूला हत्थ उठाईआ। बाशक तशका गल लटकाना, माला कंठ सुहाईआ। ना कोई दीसे संग नौजवाना, सगला संग ना कोई वखाईआ। बिन हरि कोई ना दीसे दो जहाना, बेड़ा पार कराईआ । नेत्र रो रो नीर वहाना, नैण नैण रही बिगसाईआ। पुरख अबिनाशी एका देवे ब्रह्मा ज्ञाना, पारब्रह्म वड्डी वडयाईआ। आपे मेटणहार निशाना, आपे लए उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तम प्रगट होया निहकलंक बली बलवाना, लोआं पुरीआं खण्ड ब्रह्मण्ड जेरज अंड उत्भुज सेतज दए मिटाईआ।

पारब्रह्म हरि जोत निराला, जोती जोत अखवाइंदा। प्रगट होया अकाल अकाला, अकल कला अखवाइंदा। सर्ब जीआं हरि दीन दयाला, दया निध अखवाइंदा। चरन भिखार रखाए काल महांकाला , आप आपणा वेख वखाइंदा। आपे फल लगाए सृष्ट सबाई डाल्ला, आपे तोड़ तुड़ाइंदा। आपे त्रैगुण माया पाए जंजाला, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाइंदा। आपे गुर पीर साध सन्त उपजाए साचा लाला, आप आपणे विच्च समाइंदा। आप बणाए मन्दर मसीत गुर दवारे अगनी जोत ज्वाला, आपे मेट मिटाइंदा। आपे सृष्ट सबाई होए रखवाला, आपे ख़ाक मिलाइंदा। आप वजाए जुग जुग आपणा ताला, ताल तलवाड़ा इक्क रखवाइंदा। आपे वेख वखाए लक्ख चुरासी काया घाला, आत्म अन्तर डेरा लाइंदा। आपे दीपक जोती निरगुण हरिजन बाला, आपे अज्ञान अन्धेर वखाइंदा। आपे तोड़े बजर कपाटी लग्गा ताला, आपे मुख भवाइंदा। आपे अमृत आत्म मारे इक्क उछाला, सर सरोवर आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण वेस नर नरेश आपणा आप वटाइंदा।

नर नरेश हरि भगवाना, हरि हरि आप अखवाया। जोत सरूपी पहिरया बाना, विष्नूं रूप वटाया। विष्नूं होया जाणी जाणा, सेवक सेवा रिहा कमाया। आपे वरते आपे भाणा, दूसर भेव कोई ना राया। धुरदरगाही साचा राणा, अकाल पुरख आप हो आया। जन

भगतां देवे दर दवारे माणा, सूरत नूरत इक्क दरसाया। वेख वखाए दो जहानां, मण्डल मंडप फेरा पाया। सोहँ शब्द रखाया इक्क बिबाना, सो पुरख निरञ्जण दया कमाया। आदि जुगादी खेल महाना, खेलणहार आप रघुराया। भगत जग करे पछाना, आप आपणी बणत बणाया। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना, पारब्रह्म सरनाया। एका मारे तीर निशाना, सोए रिहा उठाया। दरस दिखाए दया कमाए चतुरभुज हरि बिधनाना, आप आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तम डंक वजाया।

निहकलंका हरि भगवन्ता, एका एक अखवाईआ । पकड़ उठाए साजन सन्ता, सन्त कन्त आप हो जाईआ। जुगत जगत बणाए साची बणता, जोग जुगत आपणे हत्थ रखाईआ। सृष्ट सबाई तेरी कलिजुग झूठी मिटे जगत रुत्त बसन्ता, रैण अन्धेरी रहण ना पाईआ। धाम अव्वला पारब्रह्म इकल्ला इक्क सुहंता, चार वरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण निरगुण रूप वटाईआ।

निरगुण रूप हरि उजाला, एका एक कराया। प्रगट होया गुर गोपाला, हरि गोबिन्द वेस वटाया। तोड़णहारा जगत जंजाला, जागरत जोत जगाया। दरस दिखाए काया मन्दर अंदर सच्ची धर्मसाला, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण वेस अनेक आपणा आप वटाया।

निरगुण रूप हरि करतार, करता पुरख अखवाया। सरगुण मेला विच्च संसार, जुग जुग आण कराया । चेला गुर इक्क दवार, एका दर सुहाया। नाम भरया सच्च भंडार, भरनहार आप अखवाया। एका बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चवाया। मरन जन्म दए सवार, गेड़ा आपणे हत्थ रखाया। कर्म निहकरमी पावे सार, धर्मी धर्म धराया। वरन वरनी वस्सया बाहर, ज़ात पात ना कोई रखाया। इक्क इकल्ला एका एकँकार, एका कार कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग प्रगट हो अन्तम निहकलंक अवतार, जोती जामा भेख वटाया। जोती जामा हरि शाहो भूप, हर घट आप समाइंदा।

वेख वखाए चारों कूट, दह दिशा फेरी पाइंदा। मेट मिटाए जूठ झूठ, माया ममता वंड वंडाइंदा। सन्त सुहेले जो जन जुग जुग गए रूठ, कर किरपा मेल मिलाइंदा। दस पंज गिआ तुठ, बीस बीस नाल रलाइंदा। आप बंधाए एका मुट्ठ, एका तोल तुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस वटाइंदा।

(पहली विसाख २०१५ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

घर सुहञ्जणा हरि करतारा, एका एक सुहाया। निरगुण जोती नूर उजिआरा, नूरो नूर रखाया। शब्दी धुन शब्दी राग अपर अपारा, शब्दी ताल वजाया। शब्दी गुर सुनणेहारा, सुनणेहार आप हो जाया। गुरमुख साचे सन्त कर प्यारा, क्रिया कर्म दए मिटाया। रसना नाउँ जिस उच्चारा, कर किरपा पार कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरा दवारा, बिन सतिगुर पूरे किसे हत्थ ना आया।

कोटन कोट ब्रह्मा शिव विष्न महेश मंगण दर दवार, बैठे सीस झुकाया। कोटन कोट राम कृष्न लै अवष्तार, आवण जावण खेल रचाया। कोटन कोट साध सन्त रहे पुकारा, दिवस रैण रसन अलाया। कोटन कोट रिख मुन रहे धिआ, ध्यान विच्च किसे ना आया। कोटन कोट कर रहे ज्ञान, ज्ञान नाम मंत्र ना किसे दृढ़ाया। कोटन कोट कर रहे अशनान, हरि चरन अशनान ना कोई वखाया। कोटन कोट रसना रस करन पान, अमृत रस ना किसे चखाया। कोटन कोट जोधे सूर बली बलवान, बीड़ा धर्म कर्म ना किसे उठाया। कोटन कोट झुल्लदे पए निशान, पारब्रह्म तेरा निशान ना किसे झुलाया। नानक गोबिन्द दिता इक्क ज्ञान, एका मंत्र दृढ़ाया। एका एक श्री भगवान, गुर गोबिन्द रिहा सीस झुकाया। आदि जुगादि रहे निशान, दो जहान ना कोई मेटे मेट मिटाया। सद अबिनाश ना बिरध बाल जवान, एका रंग समाया । घट घट अंदर रक्खे वास, ना मरे ना जाया। गुरमुखां जन भगतां होए दासी दास, सीस आपणा भेट चढ़ाया। मण्डल मंडप पावे रास, गोपी काहन रूप वटाया। गुरसिख गुरसिख अन्तम पूरी करे आस, निहकलंका नाउँ धराया। हउँ सेवक सदा वसां पास, विछड़ कदे ना जाया। सतिगुर सरनाई गुरमुख ना होए कदे निरास, हरि साचा वेख वखाया। सिँघ गोबिन्द सद बल बल जास, गुर पूरे मेल मिलाया। अन्तम आया करन बन्द खलास, लक्ख चुरासी गेड़ कटाया। साची भगती रखाई रसन तजौणा मदिरा मास, भगत भगती लेखे लाया। निझ घर आत्म रखे वास, जगत तिसना चाह मिटाया। आपे होया स्वास स्वास, अजपा जाप आप हो जाया। सदा सुहेला सहाई पृथ्मी अकाश, तिन्नां लोकां पार कराया। सच दवारे कर निवास, गुरमुख साचे लए तराया। जोती जोत करे प्रकाश, अन्तम जोती मेल मिलाया। करणहार सर्ब गुण तास, आपणी करनी रिहा कराया। जुग जुग पूरन करदा आस, कलिजुग अन्तम दए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा वेखण घर, पौड़ी पौड़ी चढ़दा आया। (७-३५३)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

निहकलंक नाम धर, शब्दी डंक वजावणा। वेखणहारा साचा घर, ना भेव छुपावणा। लक्ख चुरासी जाए हर, अन्तम मुख भवावणा। गुरमुख विरला जाए तर, जिस चरनी सीस निवावणा। दरस दिखाए अग्गे खड़, पूर कराए भावना। ना कोई सीस ना कोई धड़, तोड़े लंका गढ़ रावणा। ना कोई विद्या अक्खर गिआ पढ़, भेखाधारी धरे भेख बावना। जगत अगनी गिआ सड़, अमृत बरखे सीतल सावना। पंच विकारा वगे हड़, मनमुख जीव सर्ब रुड़ावणा। गुरमुख विरला साचे जाए चढ़, पूरन ब्रह्म करे पछानणा। साचे अंदर जाए

वड़, ना छुट्टे हरि का दामना। हरि सुहाए कंचन गढ़, धुरदरगाही होए ज़ामना। कोई ना सके अग्गे अड़, प्रभ मारे तीर निशानना। कलिजुग उखेड़े लग्गी जड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अखवावणा। (७-३३७)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

त्रेता राम अवतार दुअपर कृष्न मुरार, कलिजुग लै अवतार निहकलंक अखवाए।
(२६ पोह २००७ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

जुग जुग धारे भेख, हरि निरंकारया। जुग जुग धारे भेख, शब्द अपारया। जुग जुग धारे भेख, लक्ख चुरासी विच पसारया। जुग जुग धारे भेख, सतिजुग त्रेता द्वापर पार उतारया। जुग जुग धारे भेख, ब्रह्मा ज्ञान दवाए वेद विदाता रसन उच्चारया। जुग जुग धारे भेख, शिव शंकर साची जोत जगा रिहा, बाशक तशका गल लटका रिहा। जुग जुग धारे भेख, सुरप्त राजा इन्द करोड़ तेतीसा संग बहा रिहा। जुग जुग धारे भेख, भगत धरू बणाए साची बिन्द, साचा दर आप सुहा रिहा। जुग जुग धारे भेख, वड्ड जोधा दाता हरि मरगिंद, शब्द ताज सिर टिका रिहा। जुग जुग धारे भेख, नर हरि हरि नर वड्ड मरगिंद, निन्दक दुष्ट दंत आप खपा रिहा। जुग जुग धारे भेख, हरि बख़शिंद, गरमुख साचे मेले आप करा रिहा। जुग जुग धारे भेख, बेमुख घले धर्म राए दी जेल्हे, लाड़ी मौत नाल परना रिहा। जुग जुग धारे भेख, फल लगाए साची वेले, पुरीआं लोआं आप लंघा रिहा। जुग जुग धारे भेख, अचरज खेल मात प्रभ खेले, कलिजुग वेला अन्त सुहा रिहा। जुग जुग धारे भेख, हरि सन्त बणाए सच सुहेले, सच वड्डिआई आप दवा रिहा। जुग जुग धारे भेख, गुरमुखां चाढ़े नाम तेले, शब्द वटना आप लगा रिहा। जुग जुग धारे भेख, करे खेल अन्तम वेले, नेत्र सुरमा इक्क सुहा रिहा। जुग जुग धारे भेख, गुरमुखां साचे मेले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम गाना जगत निशाना, हत्थ बन्ना रिहा।
(२१ पोह २०११ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

आपणी काया ना करी प्यारी, गुरसिख काया आण शिंगारी। गुरसिख रचिआ तेरी बहत्तर नाड़ी। कलिजुग जीवां आई किस्मत माड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ज़िमी असमान आपे बैठा पाड़ी।

आपणी देह आप तजाई। गुरसिख साचे तेरी काया जोत जगाई। सृष्ट सबाई दए दुहाई निहकलंक प्रगट होया केहड़े थाईं। केहड़ा देस केहड़ा वेस, ना कोई जाणे ना पछाणे,

पुच्छदे फिरन जादिआं राही। साध सन्त ना मिले कन्त, ना फड़दा कोई बाहीं। कलिजुग माया पाई बेअन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिसे किसे नाही।

आपणी काया दित्ती तज। सिँघ पूरन विच वड़िआ भज्ज। गुरमुखां पड़दे रिहा कज्ज। अमृत प्याए रज्ज रज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ प्रगट होए विच मैदाना पए गज्ज।

काया छड्डया झूठा चोला। गुरसिख तेरी आत्म हरि जी मवला। सृष्ट सबाई उत्तों कीता पर्दा उहला। एह काया झूठी जीवां जंतां दिसे, एह पाया रोल घचोला। सृष्ट सबाई खिड़ खिड़ हस्से, राह आपणा ना किसे दस्से, गुरसिख साचे चरन बहा के आप बणाए भोले भाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरे तोल आपे तोले। (१३ चेत २०११ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

महाराज शेर सिँघ कलंक निह दूजा कोई ना होग। (३० चेत २००८ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान , आपणी काया आप तजाई, वीह सौ बिक्रमी छब्बी पोह। छब्बी पोह देह तजाई। अचरज़ खेल हरि वरताई। चार महीने नौं दिन गिण गिण लंघाई। जोती जोत सरूप हरि, पंचम जेठ अचरज़ खेल मात वरताई। पंचम जेठ जोत जगाई। विच मात करी रुशनाई। गुरमुख साचे लए जगाई। घनकपुर हरि दया कमाई। गुर संगत साची संग रलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत अवल्लड़ी रीत चलाई।

पैहला साल हरि गुजारे। करे जोत सति चमतकारे। साचा हुक्म आप सुणाए, बणाए दरबार इक्क अपारे। चार दर दरवाजे अठ्ठ बारे। जोती जोत सरूप हरि, सतारां हाढ़ पलंघ डाहिआ सच दरबारे।

सच दरबार आप सजाया। चार दरवाजे कुण्ट चारे मुख रखाया। वेख विचारे सृष्ट सबाई तेरे दुःख, पड़दा उहला ना कोई रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा साचा राणा आपे रिहा जणाया।

दूजे साल दया हरि धारे। गुरमुखां देवे नाम अधारे। खाणी बाणी रसन उच्चारे। कुरान अञ्जीलां पावे सारे। वेद पुरानां पढ़ पढ़ हारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल अपारे।

तीजे साल तिन्ने लोक। एका चले शब्द सलोक। कोई ना सके अग्गों रोक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल अपारे, आपणा गेड़ा आपे लाया, सृष्ट सबाई रिहा झोक।

चौथे साल चरन गुर धरे। अन्तम खेल आपे करे। सच दवारे हरि जी खड़े। लेख लिखाए, वेख वेख सर्ब उठाए, पहली माघी भेव खुल्ह़ाए, गुरसिख अग्गे सीस झुकाए, प्रभ अबिनाशी किरपा करे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माझे देस आपणे कारज आपे करे हरे।

आपणा काज आप रचाया। तिन्न अस्सू नींह रखवाया। सोहणा मन्दर इक्क बणाया। काला रखवाया हरि जी अंदर, अन्ध अन्धेरा जगत कराया। बेमुखां आत्म वॅजा जंदर, ना किसे तुड़ाया। घर घर रोवण गवारी बन्दर, हाहाकार करे बिललाया। माझे देस तेरी हद्द पुरी घनक आप बणाया।

पुरी घनक हरि खिच्च लकीरे। फिरे हाल वांग फ़कीरे। नींह रखवाए धीरे धीरे। सिरों लाहे सभ दे चीरे। इिक दूजे नालों विछड़न वीरे। हउमे लग्गे सभ नूं पीड़े। सन्त मनी सिँघ लेख लिखाया, निहकलंक बन्ने बीड़े। साचा शब्द लिखवाए आप, उठाए हसत कीड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीवां आपे पीड़े।

चौथे साल खेल निराली। आप उठाए घटा काली। बैठी रहे हत्थां ख़ाली। लुट्टी जाए वड वड धन माली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क दूजे दी करे चाली।

चले चाल हरि निराली। ना कोई जाणे जोत ज्वाली। ना कोई बूझे जीव अकाली। बैठे लभ्भण धर्मशाली। फल ना दिस्सया किसे डाली। चारे कुण्टां होया ख़ाली। करे खेल दो जहानां वाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां, आपे सार समाली।

पंज साल पंज प्यारा। करे खेल अपर अपारा। साची जोत आप जगाए, माझे देस करे उजिआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए आपणा खेल अपर अपारा।

छेवें साल हरि माझे देसे। जोत सरूपी हरि प्रवेशे। साचा शब्द करे आदेसे। भुल्ले फिरन नर नरेशे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी धारे भेसे।

साल सत्तवें खेल रचाया। पंचम जेठ मात सुहाया। सपतम जेठ खुशी मनाया। सिँघ सवरन अग्गे लाया। धुर दी बाण माण गवाया। सच दवारे आसण लाया। भगत भगवान मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खाणी बाणी राह चलाया।

अठवें साल हरि दया कमाई। दसवें चेत करे रुशनाई। गुरबाणी दी नींह रखवाई। जोती जोत सरूप हरि, आपणी रचना आप रचाई।

नावें नौका इक्क चलाई। संसार सागर विच टिकाई। काया पाणी गागर आप भराई। गुरमुख विरले होए उजागर, आए हरि सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फड़ फड़ बाहों उप्पर लए चढ़ाई।

दसवें साल दहि दिश विचारे। धरत मात तेरे पाए हिस्से, करे खेल अपारे। जोत सरूपी ना किसे दिसे, भुल्ले जीव गवारे। जूठी झूठी चक्की पीसे, ना दिसे हरि करतारे। भेव मिटाए बीस इकीसे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारे।

साल यारवें मिल्या यार। प्रभ अबिनाशी सच भतार। गुर संगत करन आया प्यार। दर घर साचे होया मंगत, मंगे भिक्ख नाम अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साल गयारवें करे खेल अपर अपार।

साल गयारवें मिटदी जाए चार यारी। फिरदी जाए घर घर बहारी। रोंदे फिरन नर नारी। ढाहुंदी जाए उच्च उसारी। वहिंदे वहण वैहन्दी जाए सृष्टी सारी। बेमुखां नींह बहिंदी जाए, इक्को लग्गे धक्का भारी। इक्को गाह गैहन्दी जाए, उत्ते लग्गे सुहागा भारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल हरि निरँकारी। (७ जेठ २०११ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

निहकलंक निहकलंक निहकलंक नर निरंकारया। निहकलंक निहकलंक निहकलंक, शब्द डंक राओ रंक चार दिवारया। निहकलंक निहकलंक निहकलंक, बार अनक जोती जामा भेख वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक आपे आप अखवा रिहा।

निहकलंक आप अखवाइंदा। शब्द डंक इक्क वजाइंदा। जन भगत उपजाए जिउँ राजा जन जनक, लाए तनक कर्म कमाइंदा। भेखाधारी वासी पुरी घनक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाइंदा। (२५ भादरों २०१२)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

सतिगुर शब्द पाया वास्ता, जोत जोत जोत सीस निवाईआ। तेरा निरगुण सरगुण रासता, रस्ता मार्ग अगम्म अथाहीआ। खेल वेखणा आहिस्ता आहिस्ता, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। किसे होण ना देवीं निरासता, सीस जगदीस हत्थ टिकाईआ। खेल करना आपणे मण्डल रास दा, रहबर हो के वेख वखाईआ। भेव चुकाउणा हड्ड मास नाड़ी पवण

स्वास दा, साह साह परदा आप उठाईआ। साहिब स्वामी सच आखदा, सति तेरी वडयाईआ। तेरा खेल अलक्खणा अलाख दा, अलख अगोचर लखिआ ना जाईआ। तूं नूर नुराना इक्को जापदा, दूजा नज़र कोई ना आईआ। मैं सभ दे लेखे वाचदा, सच मालक बेपरवाहीआ। मेरा लहणा याद कर लै भविख्त वाक दा, वाक्फकार हो के दिआं सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मेरा इक्को तरला, मिन्नत विच्च सीस निवाईआ। जुग चौकड़ी इक्को तैनूं वरना, दूजा संग ना कोई बणाईआ । मैं आदि जुगादि कदे नहीं मरना, जीवण मरन विच्च कदे ना आईआ । मैं अक्खरां वाला नाम कदे नहीं पढ़ना, निशअक्खर देणा समझाईआ। मेरा भेव रहे ना चोटी जढ़ना, जढ़ चेतन्न संग ना कोई बणाईआ। जलधार वहण नहीं हड़ना, समुंद सागर ना कोई डुबाईआ। मैनूं सच दस्स की खेल जुग जुग करना, करनी करते कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखवाईआ।

सतिगुर शब्द कहे प्रभ मैं दस्सां साचा हित, हितकारी हो के सीस निवाईआ। तेरा खेल वेखां नित, नित नित तेरा संग बणाईआ। जिस कारन आएं लोकमात नवित्त, नर नरायण फेरा पाईआ। किस तन वज़ूद वसें चित, माटी ख़ाक सोभा पाईआ। मेरे साहिब परमेश्वर पित, पड़दा उहला देणा उठाईआ। की लेखा दएं लिख, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। की सिख्या देवें सिख, साख्यात समझाईआ। कि मालक होवें इक्क, एकँकार अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ।

पुरख अकाल कहे सुण शब्दी सुत दुलार, दूल्हे दिआं जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणना सेवादार, लक्ख चुरासी संग बणाईआ। फेर खेल करां अपार, अपरम्पर हो के आप कराईआ। पंजां तत्तां दिआं आधार, मानस जाति खोज खुजाईआ। जोती नूर कर उजिआर, शब्दी शब्द डंक वजाईआ। रूप धरां विच्च संसार, आप आपणा वेस वटाईआ। तेई तत्तां वाले लए अवतार, आपणी कार भुगताईआ। संदेसा देवां धुर दी धार, धुर दा हुक्म इक्क जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ।

पुरख अकाल कहे पंजां तत्तां देवां माण, तन वजूद वडयाईआ। शब्दी शब्द दे धुंनकान, अगम्म आवाज़ सुणाईआ। रस अमृत पीण खाण, बख्शिश करां चाईं चाईंआ। सुत दुलारे तेरा संग बणावां महान, सगला संग वखाईआ। अवतर रूप हो विच्च जहान, भज्जां वाहो दाहीआ। तरकश फड़ां कमान, रथां रथ भवाईआ। जुग जुग खेल महान, आपणे हत्थ रखवाईआ। तत्तां तत्तव दिआं दान, नूर नूर रुशनाईआ। पैगम्बरां कर इलहाम, आलमीन पड़दा इक्क चुकाईआ। कलमा दस्स कलाम, कायनात सुणाईआ। सारे करन

परनाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

पुरख अकाल खुशी नाल पिआ हस्स, सतिगुर शब्द जणाईआ। फिर तन वजूद जामे धारां दस, गुर गुर लोकमात वडयाईआ। अमृत बख्शां रस, निझर इक्क झिराईआ। आपणे करां वस, सिर सिर हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ।

पुरख अकाल कहे जुग जुग अवतार पैगम्बर रूप धरां, तत तत वडयाईआ। ना जन्मां मरां, चुरासी वंड ना कोई वंडाईआ। साची करनी कार करां, करके दिआं वखाईआ। नर नरायण हो के वरां, आपणा मेल मिलाईआ। अगला भेव दस्सां ज़रा, ज़ाहर ज़हूर रुशनाईआ। तन वजूद जगत बणावां शरअ, शरीअत संग रखाईआ। इक्को हुक्म देवां खरा, खालस आप दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर हो के तत्तां विच्च वड़ां, आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सच सच सुणाईआ।

पुरख अकाल कहे सतिगुर शब्द जिस वेले अवतार पैगम्बर गुरूआं बीतीआ समां, समापत पिछली खेल कराईआ। अगला हुक्म दस्सणा नवां, नर निरँकार हो के आप दृढ़ाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां फिरां विच्च चवां, दो जहानां भज्जां वाहो दाहीआ। सच दवारे साचे रवां, सच सिँघासण डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मेरे अंदर उपजिआ इक्क तराना, तुरीआं तों बाहर जणाईआ। पुरख अकाल पहिरे बाना, जुग जुग वेस वटाईआ। आह कम्म दस्से कलामा, कायनात पढ़ाईआ। रूप धरे अमामा, नूर नुराना नूर इल्लाहीआ। वेस वटाए धुर दा काहना, घनईआ सीस झुकाईआ। जिस दा वज्जे इक्क दमामा, गोबिन्द रिहा सुणाईआ। उह लेखा वेखो दो जहानां, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। कलिजुग अन्तम पहिरे बाणा, बाण अणयाला तीर उठाईआ। शरीअत विच्च ना होइ गुलामा, बंधन बंध ना कोई बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वड्डा वड्ड वडयाईआ।

सतिगुर शब्द कहे प्रभू तेरा खेल की अखीरी, आखर दे जणाईआ। चार जुग दी चलणी पीड़ी, भज्जणी वाहो दाहीआ। तूं मालक ख़ालक बेनज़ीरी, बेनज़ीर बेपरवाहीआ। कुछ लेखा दस्स तहिरीरी, तहिरीर विच्च समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

पुरख अकाल किहा सुण सतिगुर शब्द मेरे दूत, दुतीआ भेव चुकाईआ। अवतार पैगम्बर

गुरूआं तों बाद पंज तत धरां कलबूत, काया इक्क वडयाईआ। दरोही फेर के चारो कूट, कुण्टां दिआं हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ।

पुरख अकाल किहा मैं वजावां इक्क डंक, कलिजुग अन्त अन्त सुणाईआ। किसे रहण ना देवा शंक, सहिसा आप मिटाईआ। सतिगुर शब्द याद रखीं मेरा खेल होणा विच्च पुरी घनक, अनक कल आपणी कार भुगताईआ। पंचम जेठ रहे ना शंक, सहिसा दूर कराईआ। उन्नी सौ अठताली बिक्रमी होवे अंक, अंकड़िआं नाल गवाहीआ। जगत बणाउणी बणत, बसन बनवारी आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर परदा आप चुकाईआ।

सतिगुर शब्द किहा की खेल करें विच्च शरीर, सति सच दे जणाईआ। तूं मालक पीरन पीर, बेपरवाह नूर इल्लाहीआ। किस बिध देवें धीर, धरनी धवल धीर धराईआ। किस बिध बदलें चीर, तन वजूद वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

पुरख अकाल कहे सुण शब्द हुक्म अधारी, हुक्म दिआं जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल अपारी, निरगुण सरगुण तेरी धार चलाईआ। सतिजुग तेंता द्वापर खेल होवे नयारी, अवतार पैगम्बर गुरू तेरा संग बणाईआ। नाम कलमा तन जाण उच्चारी, सिफ्तां ना वडयाईआ। फिर मंगण मंग बण भिखवारी, दर ठांडे सीस झुकाईआ। किरपा कर सच्ची सरकारी, शहनशाह अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

पुरख अकाल कहे सतिगुर शब्द जगत रहणा नहीं कोई तन, गुर अवतार पैगम्बर नज़र कोई ना आईआ। जो घड़िआ सो देवां भन्न, भन्नणहार आप अखवाईआ। पंज जेठ घर ताबो चंढ़ना चन्न, जवंद सिँघ रुशनाईआ। फेर खेल करना जिस नूं समझे कोई ना मन, बुद्धि भेव कोई ना पाईआ। एह माया त्रैगुण लेखा मुकाउणा माटी चंम, चम्म दृष्टी दृष्ट बदलाईआ। तन वजूद भाण्डा देणा भन्न, लोकमात रहण ना पाईआ। नूरी जोत जोत दा चन्न, चन्न चन्न करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक्क अखवाईआ।

सतिगुर शब्द कहे प्रभू जे तन माटी भाण्डा दित्ता फोड़, वजूद रिहा ना राईआ। फिर किधर जांएं दौड़, पड़दा देणा चुकाईआ। तैनूं तक्कीए नाल ग़ौर, गहर गवर वेख वखाईआ। पुरख अकाल किहा मेरा खेल अवर दा और, अवर दिआं जणाईआ। तन वजूद झुल्ले कोई ना चौर, चवर ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप प्रगटाईआ।

सतिगुर शब्द कहे प्रभ जिस वेले रिहा ना भाण्डा कच्चा, तन नज़र कोई ना आईआ। कुछ अगला दस्स पता, अवतार पैगम्बर गुर सारे बैठे राह तकाईआ। भेव खोलू दे रता, रतन अमोलक हीरे आप उपजाईआ। साची सतिगुर वाली दे मता, कूड़ मत रहे ना राईआ। पुरख अकाल खिड़ खिड़ा के हस्सा, खुशीआं विच्च नचाईआ। जिस वेले कलिजुग अन्तम अन्धेरी होई मस्सा, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। उस वेले खेल वेखीं बिनां अक्खां, शब्दी शब्द शब्द समझाईआ। जिस दीआं अवतार पैगम्बरां गुरूआं पाईआ दस्सां, उह पड़दा दिआं चुकाईआ। मैं सम्बल खेड़े वसां, साढु तिन्न हत्थ वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर हुक्म इक्क सुणाईआ।

पुरख अकाल कहे मैं दस्सां खेल अपारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर जणाईआ। तूं शब्दी सुत दुलारा, दूलू इक्क अखवाईआ। मैं आपणे रंग रहिवां निरँकारा, जुग जुग आपणी कार भुगताईआ। सम्बल नगर महल्ल उसारा, सोहणी बणत बणाईआ। जिस दीआं जगत दिसण ना चार दीवारा, छप्पर छन्न ना कोई सुहाईआ। पत्थर इट्ट ना लावां गारा, दूजी वंड ना कोई रखवाईआ। साढु तिन्न हत्थ करां त्यारा, त्रैभवण धनी हो के वेख वखाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी अकाश कर प्यारा, प्रीतम हो के दिआं वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ।

सतिगुर शब्द कहे प्रभू तेरा सम्बल केहड़ा देस, सुहञ्जणा कवण जणाईआ। पुरख अकाल किहा अंगमा, लेख लिखण विच्च ना कोई समझाईआ। जिस वेले आवां जोती धर के भेस, अव्वलड़ा भेख वटाईआ। दीन दुनी लवां वेख, चारों कुण्ट पड़दा लाहीआ। आपणा धाम टिकाणा बणावां एक, एकँकार हो के सोभा पाईआ। जिस दी आशा रक्ख रे गिआ गुर तेग बहादर टेक, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। उस दा लेखा पूरा करना हेत, हितकारी हो के मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

पुरख अकाल किहा मेरा खेल होणा अपार, सतिगुर शब्द दिआं समझाईआ। जो आसा रक्ख के गए तेई अवतार, दूआ तीआ नाल मिलाईआ। सो सम्बल गृह करां त्यार, आप आपणी वंड वंडाईआ। नवां महल्ल दिआं उसार, घाड़त घड़न आप घड़ाईआ। जिस वेले तेई साल जोबन अवसथा होवे सिँघ शेर उजिआर, आपणा बल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर आपणा रंग रंगाईआ।

पुरख अकाल किहा मेरा खेल अगम्मा खास, खालस दिआं जणाईआ। सतिगुर शब्द करना विश्वास, विशा अवर ना कोई दृढ़ाईआ।अन्त शेर सिँघ दा सरीर होणा नास, लोकमात रहण ना पाईआ। मेरा नूर होवे प्रकाश, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस नूं झुकणे पृथ्मी अकाश, गगन गगनंतर सीस झुकाईआ। उस दा भेत खोलूां खास, खालस आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा परदा आप खुलूाईआ।

पुरख अकाल किहा सतिगुर शब्द कर लै गौर, ध्यान विच्च ध्यान लगाईआ। मेरा खेल होणा अवर का और, औरत मर्द समझे कोई ना राईआ। जिस दीन दुनी दा बदलणा दौर, दरोही आपणी कल प्रगटाईआ। शब्दी धार जोत दा मोड़, अगम्म आपणा रंग रंगाईआ। जिस नूं कहन्दे ब्राह्मण गौड़, अमाम अमामा सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ।

पुरख अकाल कहे सतिगुर शब्द उह वेख लै आपणा पत्र, पत्रका दिआं दृढ़ाईआ। ब्रिकमी तक्क लै उन्नी सौ इकत्तर, सत्त इक्क मेल मिलाईआ। पंचम जेठ होवे नछत्र, गृह मिले वडयाईआ। सच तन होवे अगम्मा रतन, जिस दी कीमत ना कोई चुकाईआ। धरनी उत्ते चलाउणा रथन, रथवाही आप अखवाईआ। जिस सभ नूं करना मथन, मिथ्या दिसे लोकाईआ। झगड़ा मेटणा रटन, रट्टा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

पुरख अकाल कहे ब्रिकमी उन्नी सौ इकत्तर तक्क, उन्नी सौ चौदां, सच्ची वज्जी वधाईआ। तन वजूद सरीर आया गाउँदा, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। जिस नाम वडिआया आपणी मां दा, बिशन कौर जणेंदी माईआ। पाल सिँघ दी गोद सुहाउँदा, सोहणा रंग रंगाईआ। हरि कौर दी यद नूं भाग लगाउँदा, सिँघ हीरा नाल तराईआ। आत्म सिँघ सुंदर सिँघ नाल वडिआया, जीवण सिँघ नाल तराईआ। बंतो तेजो नूर रुशनाया, सोहणा खेल खिलाईआ। नौं वार अक्खां मीट के बन्द कराया, नौं वार फेर खुल्हाईआ। नौं वार रो के हाल सुणाया, साहिब तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर हुक्म इक्क वरताईआ।

सतिगुर शब्द कहे मैं तक्कया जगत शरीर, तन माटी वेख वखाईआ। जिस नूं डण्डावत कीती कबीर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पैगम्बरां किहा दस्तगीर, दस्त दस्त नाल रखाईआ। अवतार कहण बेनज़ीर, तन वजूद दित्ता बणाईआ। गुरूआं किहा अमृत ठांडा सीर, झिरना अगम्म झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वड्डा वड वडयाईआ।

सतिगुर शब्द किहा जन्मया पूत पंज तत्त, घर वज्जी वधाईआ। झगड़ा मिटिआ मास रत, कूड़ कुड़िआरा डेरा ढाईआ। अन्तर उपजी धर्म मत, नाम सति जणाईआ। तेरा मालक परमेश्वर पति, परम पुरख अखवाईआ। जिस अन्तर सद जाणा वस, गृह आपणा डेरा लाईआ। मैं खुशी मनाउणी हस्स हस्स, खुशी नाल हाल सुणाईआ। घरदिआं पूरन तेरा नाम लैणा रक्ख, पूरन जोत विच्च समाईआ। सतिगुर शब्द ना होवे वक्ख, सम्बल सोभा पाईआ। जिस दा इक्को होणा हट्ट, हटवाणा इक्क अखवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर आउण नट्ठ, भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ।

पंचम जेठ कहे मैं तक्कया जगत सुत, जिस नूं जगत दए वधाईआ। झट्ट संदेसा दित्ता अबिनाशी अचुत, चेतन्न दीआ कराईआ। उह वेख तन सरीरा पैंडा रिहा मुक्क, तत्तां वाला सतिगुरू नज़र किते ना आईआ। शब्दी धार हो के जाणा उठ, नूर नुराना डगमगाईआ। साल उन्नत्ती रहणा चुप्प, दो नौं दा लेखा देणा समझाईआ। जिस वेले कलिजुग होए अन्धेरा घुप्प, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। शेर सिंघ दा सरीर जाणा छुप, जग नेत्र वेखण कोई ना पाईआ। जोती नूर उजाला हो के जाणा उठ, नूर करे रुशनाईआ। सम्बल जाणा तुट्ठ, घर आपणे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ।

पंचम जेठ कहे मैं तक्कया खेल महाना, प्रभ सहज दित्ता वखाईआ। पूरन सिंघ जन्मया जिस दा पूरन ब्रह्म निशाना, पूरन वेखे थाउँ थाईंआ। पाल सिंघ छट्टा दिता दाणा, चारों कुण्ट दित्ता वखाईआ। मंगलवार सी गाया गाणा, खुशीआं नाल सुणाईआ। नशा चढ़या जगत जहाना, जगत जगत विच्च मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप सुणाईआ।

पंचम जेठ कहे मैं होया हक़ा बक्का, हैरानी विच्च जणाईआ। मैनूं अवतारां संदेशा दित्ता पक्का, सहज नाल सुणाईआ। पैगम्बरां किहा हकीकत हक़ा, हक़ हक़ दृढ़ाईआ। गुरूआं किहा फरक ना रता, भेव अभेद दित्ता खुल्हाईआ। एह सम्बल देस सच्चा, साढे तिन्न हत्थ वज्जे वधाईआ। जिथ्थे पुरख अकाल आवे नस्सा, भज्जे वाहो दाहीआ। कलिजुग रैण अन्धेरी मेटे मस्सा, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मारीआं कच्छां, नच्चे टप्पे कुद्दे चाईं चाईंआ। कलिजुग कूड़े पै गईआं गशां, नेत्र रोवे मारे धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ।

पंचम जेठ कहे मैं तक्कया चोरी चोरी, चुराहिआं विच्च ध्यान लगाईआ। की खेल करे जो हर घट अंदर घोरी, घोर अन्धेरे वेख वखाईआ। जिस दी निरगुण धार डोरी, डोरी गंढु पवाईआ। उह बण के बांका छोहरी, शहनशाह आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ।

पंचम जेठ कहे नन्न्हे बाल नूं आई सुरती, पूरन पूरन रूप समाईआ। जगत जिज्ञयासूआं दित्ती गुड़्ती, आपणा सगन बणाईआ। जिस दी अन्तर लिव धुर दी, धुर सके ना कोई तुड़ाईआ। उन आसा पूरी कीती अनन्द पुर दी, पुरीआं लोआं तों बाहर डेरा लाईआ। जिथ्थे शब्द जोत जुड़दी, उस धाम दित्ती वडयाईआ। जिस पूरन दी लोहड़ी वंडी सी गुड़ दी, उह गुरमुखां नूं मिट्ठा रस खवाईआ। जिस दी डली कदे नहीं खुरदी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

सतिगुर शब्द कहे प्रभ बड़ा कनूंनी, जिस दी समझ किसे ना पाईआ। उस ने पूरन

सिँघ दा पाल तों नां धराया नूनी, जिस नून नून विच्च डेरा लाईआ। जिस दी आयू इक्क दो दो तों दूणी दोहरी खेल खिलाईआ। जिस ने दीन दुनी विच्च बदल दित्ती कूणी, काया कुरह वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा खेल वखाईआ।

पंचम जेठ कहे मैं वेख्या साढ़े तिन्न हत्थदा मुनारा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिस नूं घड़िआ आप निरँकारा, बाडी अवर ना कोई वखाईआ। जगत जगत दा बणा मुलारा, तत तत्त नाल चमकाईआ। खेल दस्सदा रिहा अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी कार भुगताईआ। जिस नूं कहणा सभ ने साचा मीत प्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वड्डा वड वडयाईआ।

पंचम जेठ कहे मैं की दस्सां हाल मुरीदा, सिफ्त ना कोई सालाहीआ। जिस वेले बाल दा तक्कया दीदा, नेत्र नैणा दर्शन पाईआ। मैं समझया खेल कोई पोचदा, पहचान सके कोई ना राईआ। जिस पैगम्बरां दीआं पूरीआं करनीआं ईदां, आदत इबादत वेखे थाउँ थाईंआ। अवतार पैगम्बर गुरूआं तक्कणीआं वलदीअतां, पड़दा उहला आप उठाईआ। अग्गे सच देणीआं नसीहतां, हुक्म सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ।

जेठ कहे मैं रिहा ताक, आपणा ध्यान लगाईआ। मैनूं सभ दे याद भविख्त पिछले वाक, वाकफ हो के दिआं सुणाईआ। जिस वेले ईसा ने सति सति दा तक्कया कलाक, घड़ी घड़ी नाल मिलाईआ। झट्ट संदेशा दित्ता आख, धर दा हुक्म जणाईआ। वसले वज़ीह आउणा मेरा बाप, मेहरवान नूर इल्लाहीआ। दीन दुनी बदले हालात, हालात वेखे ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच वडयाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मैं वेख्या खेल संसारी, जगत ध्यान लगाईआ। पूरन काया लग्गे प्यारी, वड्डे छोटे वेख वखाईआ। संसार दी रीती जगत दी धारी, जगत नाल समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

सतिगुर शब्द कहे जिस वेले बाला होया हुशिआर, आपणी लई अंगढ़ाईआ। कोई समझे ना कोई जीव संसार, समझ किसे ना पाईआ। किस दा घर किस दा घर बार, मालक कवण अखवाईआ। किस दा मन्दर किस कीता त्यार, कवण दीप जोत करे रुशनाईआ। कवण सिँघासण आसण लाए सच्ची सरकार, सोभावन्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मैं सति सति सुणाउँदा, सच सच जणाईआ। पूरन सिँघ निक्का बाला माता पिता खिडाउणयां नाल वरचाउँदा, खिडौणे हत्थां विच्च फड़ाईआ। कदी जगत चूसणी मुख टिकाउँदा, रस जगत वाला चुसाईआ। कदी छणकणा हत्थ छणकाउँदा, डंका दो जहान वजाईआ। कदे सच प्याला हत्थ उठाउँदा, अमृत जाम भराईआ। कदे डौरू इक्क वजाउँदा, जन भगतां सद्दा देवे थाउँ थाईआ। कदे जगत भंबीरी वांग भवाउँदा, चारों कुण्ट हिलाईआ। कदे शब्दी गुरज़ हत्थ उठाउँदा, विष्न ब्रह्मा शिव डराईआ। कदे धरती मुट्ठी विच्च दबाउँदा, आपणी कल वरताईआ। कदे देवी देवतिआं खुशी विच्च जणाउँदा, तूं ही तूं ही राग अलाहीआ। कदी मन के मणके सर्ब भवाउँदा, मणका मणके नाल ठुकराईआ। कदे जगत जहान लड़ाउँदा, सोहणीआं टक्करां दए टकराईआ। कदे दीन दुनी भुक्खी तड़फाउँदा, खाली भंडारे ना कोई भराईआ। कदे मध दे जाम प्याउँदा, प्याले असुरां हत्थ फड़ाईआ। कदे जल पाणी तड़फाउँदा, आब हत्थ किसे ना आईआ। कदे जगत वहण वहाउँदा, चाह काफीआं नाल रुड़ाईआ। कदे आपणा सवांग वरताउँदा, निरगुण सरगुण आपणी अदला बदली विच्च रंग रंगाईआ। कदे इक्क तों दो दो तों इक्क आप आपणा विच्च छुपाउँदा, छुपिआ नज़र किसे ना आईआ। कदे मानव मानस मानुख मनमत विच्च तड़फाउँदा, बुद्धि चले ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

पंचम जेठ कहे मैं तक्कया इक्को साथी, जो सच्चा नज़री आईआ। जिस लेखा पूरा करना ऐरापत हाथी, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सभ दा लहणा देणा पूरा करे बाकी, खाली भंडारे दए भराईआ। जिस दी वक्खरी चाल बांकी, निराली इक्क तकाईआ। सभ नूं देवे थापी, थपक थपक सुआईआ। उस ने कोट कोट कोट जन्म दे उधारने पापी, जिस नूं नाम दा धक्का देवे लगाईआ। जिस ने सभ दी पूरी करनी वाटी, विष्नूं रोवे मारे धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

पंचम जेठ कहे मैं वेख्या छणकाट, सोहणा खेल खिलाईआ। जिस ने दीन दुनी दा तक्कया घाट, पतन बैठा धुर दा माहीआ। जिस ने शरअ दी तक्की परात, पुरातन लेखा फोल फुलाईआ। उस ने सभ दी मेटणी वाट, अगला पन्ध रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

पंचम जेठ कहे मैं खेलदा वेख्या बाला, सोहणी खेल वखाईआ। नच्चे टप्पे कुद्दे मारे छाला, वलीआ छलीआ आपणा वेस वटाईआ। कदे हस्से ते कदे रोवे बाहला, जिद विच्च जिद आपणी पूर कराईआ। कदे मां नूं कढ्ढु गाला, कोठे कंधां उत्ते भज्जे वाहो दाहीआ। कदे रोड़िआं दीआं बणावे माला, पत्थर गीटे हत्थां विच्च रखाईआ। कदे हत्थ मारे करीरां डाला, फल फुल्ल दए झड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

सतिगुर शब्द कहे मैं अवतारां पैगम्बरां गुरूआं तों सुणया अख़ीर, सभ ने दित्ता सुणाईआ। जिस ने सम्बल दी कीती तामीर, सो सम्बल दा मालक इक्क अखवाईआ। जिस अवतार पैगम्बर गुरूआं दित्ती धीर, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। उस दा खेल होणा बेनज़ीर, नज़र वेखण कोई ना पाईआ। याद रक्खयो जिस वेले आपणी घड़ी दा उस ने बदल दित्ता ज़ंजीर, शरअ दीआं ज़ंजीरीआं दए तुड़ाईआ। जन भगतां दी नवीं बणाए तकदीर, पित्तल तों कंचन आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ।

पंचम जेठ कहे मेरा दिवस सुभागी चंगा, चंगी मिली वडयाईआ। लेखा पूरा पुरी अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ । सुणया सुहागी छन्दा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोई ना आईआ। घर घर वज्जया मरदंगा, नौबत नाम सुणाईआ। अग्गे दीन दुनी दीआं जिस ने नवीआं पाउणीआं वंडां, हिस्से हत्थों हत्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

सतिगुर शब्द कहे जिस दी धार नूं हो गए साल अठवंजा, पंज अठ्ठ मिल के वज्जी वधाईआ। जिस लेखा पूरा करना साल साल बवंजा, सिँघ शेर शेर जणाईआ। अगला हुक्म दा लाउणा पंजा, पंचम आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

सतिगुर शब्द कहे भेटा हो गिआ लाल चोला, लालन लाल रंग रंगाईआ। दीन दुनी दा वेखे होला, होली दा लेखा दए भुलाईआ। कलिजुग कलिजुग दा करना गोला, मालक रहण कोई ना पाईआ। नेत्र रोवे धरनी धौला, धवल मारे धाहीआ। की खेल करे प्रभ मौला, हरि करता नूर इल्लाहीआ। वाहदा पूरा करे कौला, इकरार वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

धुर शब्द कहे दिवस दिवस विच्चों बदला, बदली हरि कराईआ। अग्गे होवे धर्म दा अदला, इन्साफ वंड वंडाईआ। शरअ शरअ नूं करे कतला, कातल मकतूल लेखा रहे ना राईआ। जन भगत सुहेले तक्के रतना, रतन अमोलक खोज खुजाईआ। जिस सम्बल बणाया आपणा वतना, सो बेवतनां लए उठाईआ। वीह सौ उन्नती बिक्रमी बण गिआ पतना, पंचम जेठ सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

सतिगुर शब्द कहे पंचम जेठ सुहावा, रुतड़ी सच सुहाईआ। सभ दा पूरा करे दाहवा, जो दाहवेदार अखवाईआ। चार जुग दे तक्के राहवां, रहबर हो के फोल फुलाईआ। कलिजुग दा अन्तम लेखा करे सावां, सांवल सुंदर हो के खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ।

पंचम जेठ कहे मेरी इक्क वधाई, वधके दिआं सुणाईआ। एह तन उपजिआ विच्च सताई, दो सत्त सोभा पाईआ। जिस दी अवतार पैगम्बर देण गवाही, शहादत गुर भुगताईआ। एह नूर अगम्म इल्लाही, नूर नुराना नज़री आईआ। जिस ने कलिजुग कूड़ी क्रिया मेटणी शाही, शहनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां सिर रक्खे ठंडीआं छाईं, अगनी तत ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ।

पंचम जेठ कहे जन भगतो तुहाढ्ढीआं जुग जन्म दीआं उडीकां, तारीख तवारीख दए गवाहीआ। जो मंगदे रहे भीखां, भिक्खक हो के झोलीआं डाहीआ। पढ़दे रहे हदीसा, कलमा नाम अलाईआ। झुकाउँदे रहे सीसां, डण्डावत बन्दना सजदयां विच्च समाईआ। प्रेम प्यार विच्च पीसण पीसा, चक्की धर्म धार चलाईआ । सभ दा लहणा देणा पूरा करे हरि जगदीसा, हरि करता वड वडयाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तक्कण ला के नीझां, बिनां अक्खां अक्ख खुल्ह्राईआ। जिन्हां बाले दीआं भेटा कीतीआं कमीजां, बसतरां नाल सुहाईआ। खिलाउणयां वालीआं चीजां, वेखे ख़लक खुदाईआ। जिस सभ दीआं पूरीआं करनीआं रीझां, मेहर नज़र उठाईआ। त्रैगुण दीआं उम्मीदां, तिन्न हार देण गवाहीआ। अकवंजा अक्खरां नानक मारीआं लीकां, बवंजवां शब्द शब्द शनवाईआ। साहिब साहिब प्रीता, प्रीतम नाल वडयाईआ। आदि जुगादी इक्को मीता, मित्र प्यारा इक्क अखवाईआ। जो सभ दा सीना करे ठांडा सीता, अगनी तत ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ।

जेठ कहे मेरी सभ दे अग्गे बन्दना, बन्दीखाना लैणा तुड़ाईआ। वेखणा इक्क अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों खोज खुजाईआ। ओसे दी धूढ़ी मस्तक लाउणा चन्दना, जो चन्द सितारयां करे रुशनाईआ। जिस ने ब्रह्मण्डां खण्डां पार लँघणा, अद्ध विच्च ना कोई लटकाईआ। जेठ कहे मैं उस दी किरपा नाल भगतो तुहाथों मंगणा, खाली झोली अग्गे डाहीआ। जिस दे हत्थ नूं चढ़ गईआं रंगणां, उह लाल रंगीले तुहानूं दए बणाईआ। जिस ने चारों कुण्ट वंझणा, वंझ मुहाणयां लोड़ ना कोई रखाईआ। नौं सौ चुरानमे चौकड़ी जुग पिच्छों पूरन सिँघ दा सरीर फेर जम्मणा, जिस नूं सम्बल कह के अवतार पैगम्बर गुर गए गाईआ। उथ्थे खेल करे सूरा सर्बंगणा, शाह पातशाह शहनशाह नूर इल्लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस ने नाम निधाना जन भगतां साचा वंडणा, अतोट अतुट्ट आप वरताईआ। (५ जेठ शहनशाही सम्मत ८)

❇ ❇ ❇ ❇ ❇

निहकलंक हरि जोत जगा, शब्दी अमाम अखवाईआ। ब्रह्मण गौड़ा आप हो जा, गोबिन्द गढ़ सुहाईआ। सम्बल नगरी डेरा ला, मक्का मदीना फेरा पाईआ। पंडत काशी

लए जगा, जगत विद्या दए दुहाईआ। साची सिख्या दए सिखा, एका मत समझाईआ। चार वरनां एका धाम दए बहा, जूठे झूठे मेट मिटाईआ। मुस्लम सुन्नी कोई रहणा ना, पंडत पांधा ना कोई तिलक लगाईआ। ग्रंथी पन्थी ना सके कोई किसे बचा, ना होवे कोई सहाईआ। पुरख अबिनाशी आप आपणी जोत जगा, चारों कुण्ट करे रुशनाईआ। शब्द निराला तीर चला, लक्ख चुरासी दए खपाईआ। शाह कंगाला वेख वखा, दो जहानां फेरा पाईआ। तालब तलथ पूरी दए करा, गालब गलब आप अखवाईआ। सालस होवे विच्च जहां, सच सालसी आप कराईआ। चार वरनां खालस खालसा दए बणा, एका मंत्र नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग कूड़ करे जुदाईआ। (७—३५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

महाराज शेर सिँघ आदि जुगादि, है भी होसी हुंदा आया। (२५ चेत २००८ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

सतिगुर शब्द निहकलंक निरवैर कलकी अवतार, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा पंडत पांधा मुल्ला शेख़ मुसाइक समझ ना पाए जीव विच्च संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। निहकलंक हरि का रूप, हरि जू आप अखवाइंदा। जिस दा डंका चार कूट, दह दिशा हुक्म सुणाइंदा। लेख चुकाए जूठ झूठ, माया ममता मोह मिटाइंदा। दए वड्डिआई काया पंज तत भूत, भविख्त आपणा वेख वखाइंदा। वसणहारा महल्ल अट्टल इक्क अरूज, अर्श फर्श चरनां हेठ दबाइंदा। भेव खुल्हाए आपणा दूज, जन भगतां पड़दा लाहिंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल कलकी वेस वटाइंदा।

कल कलकी जोत उजाला, निरवैर वड्डी वडयाईआ। दो जहानां बण रखवाला, ज़िमीं असमानां वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लो वेखे हाला, लक्ख चुरासी खोजे थाउँ थाईंआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया त्रैगुण वेखे जगत जंजाला, पंज तत अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पड़दा रिहा उठाईआ। सति धर्म दी सच्च सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी इक्को इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल कलकी दए वडयाईआ।

कल कलकी निहकलंक एक, आदि पुरख नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी रक्खदे टेक, भगत भगवान ओट रखवाईआ। हर घट अन्तर जो रिहा वेख, अनभव आपणा खेल रचाईआ। सम्बल वसणहारा साचे देस, साढ्ठे तिन्न हत्थ सोभा पाईआ। जिस नूं लभ्भदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, करोड़ तेतीसा हत्थ किसे ना आईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण सरगुण कर के भेस, वेस अव्वलड़ा इक्क

वटाईआ। धुर संदेशा नर नरेशा सतिजुग सति सति देवे संदेश, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। जन भगतां गुरमुखां गुरसिखां साचे सन्तां काया मन्दर अंदर वड़ के साचे पौड़े चढ़ के दस्से भेद, बजर कपाटी पड़दा परे हटाईआ। सो अन्तर आत्म परमात्म लैण पेखव, निज नेत्र खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा निहकलंक इक्को एक, एकँकार अखवाईआ।

पंज तत नर निहकलंक, तत्तव तत ना कोई वडयाईआ। पुरख अकाल जिस दा दो जहान साचा डंक, शब्दी शब्द राग अलाईआ। सो साहिब दयाल हो के साढ़ु तिन्न हत्थ सुहाए बंक, बंक दवारी सोभा पाईआ। जिस नूं अंकड़िआं विच्च करे ना कोई अंक, बीस बीसा हरि जगदीशा शाह पातशाह इक्क अखवाईआ। चार वरन अठारां बरन शत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश दस्से सच हदीसा नाम मंत्र कलमां सति, साची सिख्या इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक बेपरवाहीआ।

निहकलंक श्री भगवान, जन भगतां दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी देवे दान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेख वखाइंदा। लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म बण के साचा काहन, नाम बंसरी इक्क सुणाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां मार ध्यान, जेरज अंडा खोज खुजाइंदा। जोधा सूरबीर बण बलवान, नौजवान आपणा हुक्म वरताइंदा। खड़ग खण्डा तीर कमान, शस्त्र बस्तर इक्क निशान, शब्दी धार धार धार विच्चों प्रगटाइंदा। जिसदा गुर अवतार पीर पैगम्बर रसना जेहवा बत्ती दन्द दे के गए बिआन, काग़ज़ कलम शाही वंड वंडाइंदा। सो साहिब स्वामी पुरख निरञ्जण धुर दा दाता श्री भगवान, निहकलंक कल कलकी इक्क अखवाइंदा। (६ भादरों २०२१ बि)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

आदि अन्त भगवान सदा मालक जगत, दो जहानां वाली इक्क अखवाइंदा। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग निरगुण सरगुण देवणहारा शक्त, जोती जाता पुरख बिधाता दया कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर साध सन्त वेखणहारा भगत, भगवन आपणे रंग रंगाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटणहारा विच्च संसारा, कल कलकी जाणे आपणा वक्त, घड़ी वार थित आपणे घर रखाईआ। गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा सृष्ट सबाई इक्को दस्से पुरख अकाला इष्ट, शत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को राह वखाईआ। अन्तर आत्म ब्रह्म पारब्रह्म खोल्हणहारा दृष्ट, शब्द अनादी नाद धुर दा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ।

विष्नूं कहे मैं सेवादार, श्री भगवान कहे हुक्मे अंदर खेल खिलाईआ। गुर अवतार कहण जुग चौकड़ी करीए कार, नित नवित्त हुक्मे अंदर फेरा पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान करन पुकार, अंज़ील कुरान चारे खाणी चारे बाणी रही जणाईआ। सभ दा मालक

एकँकारा हरि निरँकारा धुर दरगाही परवरदिगार, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी मुकामे हक़ डेरा लाईआ। जिस दा भविख्तां विच्च करदे गए विचार, लिखतां विच्च सुनेहड़े दिन्दे गए संसार, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सुणाईआ। कल कलकी लए अवतार, जोती जाता वड बलकार, निहकलंक आपणा डंक वजाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप शाह सुलतानां राज राजानां करे खुआर, चार कुण्ट दह दिशा वेख वखाईआ। नाम डंका राओ रंकां आप सुणा के करे ख़बरदार, सोया कोई रहण ना पाईआ। जगमग जोत जोत जगे अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह करे सच रुशनाईआ। गुरमुख गुरसिख सज्जण सुहेले लए उठाल, गुर चेले मेल मिलाईआ। धुर दी सिख्या इक्को दए सिखाल, साची करे पढ़ाईआ। उठ लाडले मेरे लाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। साची करनी करे निरँकार, करते हत्थ वडी वडयाईआ। बीस इकीसा होया ख़बरदार, धुर संदेशा रिहा सुणाईआ। सदी चौधवीं मारे मार, चौदां तबक दए हिलाईआ। चौदां लोक रोवण धाहीं मार, ब्रह्मण्ड खण्ड सर्ब कुरलाईआ। शत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश देवे ना कोई आधार, चार वरन अठारां बरन धीरज धीर ना कोई धराईआ। खड़ग खण्डा नाम कटार, तेज परचंडा इक्को इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग अन्तम वेख वखाईआ।

कलिजुग अन्तम खेल करे विष्नूं भगवाना, वडी वड वडयाईआ। सति धर्म दा इक्क निशाना, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आप झुलाईआ। गुरमुखां गुरसिखां देवे नाम निधाना, अमृत रस इक्को जाम प्याईआ। भाग लगाए काया मन्दर साढ़े तिन्न हत्थ मकाना, घर विच्च घर करे रुशनाईआ। शब्द सुणाए अगम्मी गाना, अनहद नादी नाद वजाईआ। हरि का रोक ना सके कोई भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। बीस इकीसा हरि जगदीसा तख़तों लाहे राजा राणा, सीस छत्र ना कोई झुलाईआ। लेख जाणे दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंडज उत्भुज सेतज खोज खुजाईआ। जोत सरूपी पहिरे बाणा, निहकलंक बली बलवाना, भेद अभेदा आपणे हत्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन बख्शे सच सरनाईआ।

निहकलंक वड राजन राज, पारब्रह्म अखवाइंदा। जिस दे सीस सोहे इक्को ताज, तख्त निवासी सारे मेट मिटाइंदा। करनी करता करे आपणा काज, कुदरत कादर खेल वखाइंदा। जन भगतां रक्खे लाज, गुरमुखां आपणे रंग रंगाइंदा। रातीं सुत्यां दिने जागदिआं शब्द सरूपी मारे आवाज़, सोई सुरत आप उठाइंदा। साचे बेड़े नाम चढ़ा के जहाज़, नईआ नौका पार कराइंदा। एथ्थे ओथ्थे दो जहानां दे के साथ, धुर दा संगी वेख वखाइंदा। साचा सिमरन पूजा पाठ, जोग अभिआस हठ तप साधन इक्को नाम जणाइंदा। काया मन्दर अंदर सुरती शब्दी गोपी काहन पवाए रास, घनईआ सईआ इक्को नज़रीं आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण पूरी करके आस, नानक गोबिन्द आपणी खेल वखाइंदा।

निहकलंक हरि गोबिन्द सूरा, शब्दी रूप वटाईआ। एथ्थे उथ्थे दो जहानां हाज़र हज़ूरा, हज़रतां विच्चों बेपरवाहीआ। सेवकां विच्चों सेवक चाकर बणे मज़दूरा, माण अभिमान नेड़ कोई ना आईआ। रागाँ विच्चों नाद अगम्मी वजाए अनहद साची तूरा, धुर दी बाणी आप सुणाईआ। भविख्त वाकां करके पूरा, लेखा लिख्त दए कराईआ। कलिजुग क्रिया साफ़ करे कूड़ा, सतिजुग साचा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

निहकलंक हरि गोबिन्द आया, शब्दी धार जणाईआ। त्रैगुण कूड़ी मेटणहारा माया, ममता मोह चुकाईआ। साचा मार्ग इक्क रखाया, सृष्ट सबाई दए समझाईआ। पुरख अकाल सभ दा इष्ट जणाया, दृष्ट दिभ दए खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ। निहकलंक हरि का रूप, हरि ही नज़रीं आईआ। आदि जुगादी सति सरूप, सति सतिवादी खेल खिलाईआ। वेखणहारा चारे कूट, दह दिशा फोल फुलाईआ। गुरमुख वेखे सच सपूत, सन्त सुहेले गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सुल्तान बेपरवाहीआ।

साहिब सुल्तान श्री भगवन्त, एकँकारा इक्क अखवाइंदा। वेखणहारा लक्ख चुरासी जीव जंत, जगत जुगत आपणे हत्थ रखाइंदा । कलिजुग वेला आया अन्त, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। अंदर वड़के रोंदे गुरमुख सच्चे भगत, नेत्र निज ध्यान सर्ब लगाइंदा। किरपा कर वाली अर्श फर्श, आशर्म तेरा सच्चा नज़र किसे ना आइंदा। जगत तृस्ना माया ममता काम क्रोध लोभ मोह हँकार रिहा भड़क, अगनी अग्ग अमृत सिंच ना कोई बुझाइंदा। सति धर्म यत सील सन्तोख तुटा तग, डोरी नाम तन्द ना कोई वखाइंदा। कलिजुग जीव हँस बुद्धि होई कग, बगला बप्प नज़री आइंदा। अन्तर वेख खेल पुरख समरथ, गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा राह तकाइंदा। निहकलंक हो प्रगट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, तेरा दर सुच्चा नज़रीं आइंदा।

विष्नूं भगवान तेरी आशा, आसा आसा विच्चों प्रगटाईआ। नित नवित्त तेरा भरवासा, मेहर नज़र उठाईआ। कलिजुग अन्तम कूड़ी क्रिया वेख तमाशा, जूठ झूठ वज्जी वधाईआ। जीवा जंतां साधा सन्तां अंदरों खाली कासा, नाम पदार्थ वस्तू सच झोली ना कोई टिकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़ पढ़ थक्के गाथा, विद्या नाल करन लड़ाईआ। जिध्धर वेखो सभ नूं दिसे घाटा, कन्नी गंढु ना कोई वखाईआ। तुध बिन साहिब स्वामी कल दिसे कोई ना राखा, रक्खया करे ना कोई थाउँ थाईंआ। गोबिन्द सूरा लिखा के गिआ साका, साखी आपणी इक्क समझाईआ। कलिजुग अन्तम सदी वीहवीं लहणा देणा देवां बाका, लेखा अगला पिछला झोली पाईआ । अग्गे रहण ना देवां कोई आका, अकल सभ दी दिआं भवाईआ। सच दवार दा खोल्ह़ के साचा ताका, सतिजुग सच्चा राह चलाईआ। सभ दा बणके माई बापा, पिता पुरख अकाल देणा मिलाईआ। जिस दी ज़ात पात ना कोई वरन

बरन ज़ाता, ऊँच नीच राओ रंक नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी दया कमाईआ।

सति सतिवादी साचा कर्म, हरि करता आप कमाईआ। इक्क वखाए सृष्टी धर्म, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। भेव चुकाए आत्म ब्रह्म, पारब्रह्म पड़दा दए उठाईआ। गोबिन्द दस्से साची सरन, पुरख अकाल मिलाईआ। ठग्गाँ चोरां यारां आवे फड़न, कूड़ कुड़िआरां बंधन देवे पाईआ। शाह सुलतानां राज राजानां नाल आया लड़न, साचा खण्डा खड़ग तेग खिच इक्को हत्थ उठाईआ। साची मंज़ल आया चढ़न, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणा फेरा पाईआ। कलिजुग किरपा आया करन, गुरमुख गुरसिख वेख वखाईआ। जो नित नवित्त आत्म अन्तर ध्यान करन, बिन समाधी समाधी विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र खोल्हके हरन फरन, निज नैण करे रुशनाईआ।

विष्नूं भगवान जोत में जाता, अकल कला अखवाईआ। आदि जुगादि बण ज्ञयाता, ज्ञान इक्को इक्क दृढ़ाईआ। सुरती शब्दी बन्ह के नाता, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। कलिजुग अन्तम वेखणहार तमाशा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पावणहारा रासां, मण्डल मंडप सारे बंक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची बंसरी नाम वजाईआ। साची बंसरी वजावे बीन, नाम खुमारी इक्क चढ़ाईआ। लेखा चुक्के लोक तीन, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। मार्ग दस्स इक्क महीन, सुखमन पन्ध मुकाईआ। तेरा नाम लईए चीन, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। तेरे उत्ते सभ दा आवे यकीन, भरोसा इक्को दे कराईआ। स्वामी तेरी सृष्टी तेरे होए अद्धीन, सिर सके ना कोई उठाईआ। हुक्मे अंदर नर मदीन, नारी नर दोवें सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दो जहानां वेख वखाईआ।

दो जहानां हरि जू मालक, एकँकार आप अखवाईआ। सृष्ट सबाई बण प्रिपालक, विष्नूं हो के सेव कमाईआ। नूर खुदाई ज़ाहर ज़हूर हो के ख़लक ख़ालक, मख़लूक आपणे रंग रंगाईआ। कलिजुग अन्तम सभ दी सूरत रक्खे साबत, सतिजुग साचा राह चलाईआ। जिस करनी करन आया बाबत, बाबल आपणा फेरा पाईआ। सो सभ दी पूरी करके हाजत, हुजरा हक़ दए वखाईआ। जिथ्थे वज्जे इक्को नौबत, डंका नाम सुणाईआ। परम पुरख दी होवे सोहबत, इक्को नाम ध्याईआ। कलिजुग अन्तम मुक्की वेखो मोहलत, वेला वक्त दए दुहाईआ। सभ दी खाली होणी कूड़ी गोलक, माया मोह रहण ना पाईआ। गोबिन्द डंका वज्जणा इक्क अमोलक, दो जहानां करे शनवाईआ। परम पुरख दा मेला होणा ओड़क, नाता तुट्टे सर्ब लुकाईआ। जिसनूं खोजदे गए कोट कोटन, कोटी कोट ध्यान लगाईआ। उह चढ़के वेखे काया मन्दर अंदर सभ दी चोटन, सच दवारे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

श्री भगवान कहे सुणो लोक परलोक, ब्रह्मण्ड खण्ड दिआं जणाईआ। कलिजुग अन्तम शब्द संदेशा देवां धुर सलोक, सोहला आपणा नाम सुणाईआ। निहकलंक निरगुण जोत, रूप रंग रेख समझ किसे ना आईआ। सति दवारे बिन सतिगुर पूरे कोई ना सके पहुंच, कोटन कोट पान्धी राही राह विच्च बैठे डेरा लाईआ। बुद्धि नाल किसे ना आवे सोच, कलिजुग जीव अनभव अक्ख ना कोई खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग लेखा दए मुकाईआ।

कलिजुग कूच होणा डेरा, लोकमात रहण ना पाईआ। शब्द गुर गोबिन्द मारे फेरा, वेस आपणा आप वटाईआ। लक्ख चुरासी उलटा देवे गेड़ा, शब्दी लट्ठ भवाईआ। एस भाणे नूं रोके केहड़ा, राजे राणे सर्ब ख़ाक मिलाईआ। कूड़ी क्रिया मात विच्चों चुक्के झेड़ा, सच सुच्च वज्जे वधाईआ। चार कुण्ट दह दिशा वसदा उजड़े सारा खेड़ा, मन्दर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ देण दुहाईआ। अठां सट्ठां तीर्थ तट्टां होया अन्धेरा, गंगा गोदावरी जमना सुरसती नेत्र नैणां नीर रही वहाईआ। बिन साहिब स्वामी अन्तरजामी कोई ना बन्ने बेड़ा, शौह दरया पार ना कोई लंघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेशा रिहा सुणाईआ।

कलिजुग अन्तम सारे रहे दौड़, भज्जण वाहो दाहीआ। कोई कहे ओ ब्राह्मण गौड़, नेत्र नैण अक्ख खुल्ह़ाईआ। कोई कहे उस जाणा बौहड़, जो अमामां दा अमाम बेपरवाहीआ। कोई कहे उसने वेखणा तक्क के गौर, बिन अक्खां अक्ख खुल्ह़ाईआ। जिस दे आदि जुगादि सिर ते झुलदा चौर, सो साहिब स्वामी लासानी इक्को इक्क अखवाईआ। नानक गोबिन्द किहा कल कलकी जाए बौहड़, निहकलंक आपणा नाम रखवाईआ। जिस दे हत्थ विच्च लक्ख चुरासी डोर, विष्न ब्रह्मा शिव हुक्मे विच्च भवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे उसदे अग्गे खढ़े हत्थ जोड़, नमो नमो सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

बेपरवाह निहकलंक निहकर्मी, कर्म कांड नज़र कोई ना आईआ। धुर दा माल सभ दा धर्मी, धर्म इक्को इक्क लगाईआ। वसे बाहर वरनी बरनी, ज़ात पात विच्च वड़के आपणा आप ना कदे फसाईआ। जीव जंत साध सन्त सभ नूं बख्शे इक्को सरनी, सरनगत इक्को दए दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को तुक पढ़नी, सोहँ सति सरूप समाईआ। साची मंज़ल गुरमुख चढ़नी, काया मन्दर अंदर पौड़ी डण्डा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कल कलकी बेपरवाहीआ।

कल कलकी हरि फेरा पाया, पाररब्रह्म वड्डी वडयाईआ। जिस दा रूप रंग किसे नज़र ना आया, शास्त्र सिमरत वेद पुरान अञ्जील कुरान खाणी बाणी रही सुणाईआ। साचे नगर डेरा लाया, उच्च मुनारा इक्क सुहाया, सम्बल मिली वडयाईआ। अदल इन्साफ करने आया, जगत गुस्ताख़ मेटण आया, भगत उदास वेखण आया, गुरमुख लए जगाईआ। पृथ्मी आकाश

खोजण आया, ब्रह्म ब्रह्माद वरोलण आया, शब्द अगम्मी बोलण आया, धुर दा राग सुणाईआ। लक्ख चुरासी नाम कंडे तोलण आया, सच दवार सृष्ट सबाई इक्को खोलूण आया, एका दूजा भउ सर्ब मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

कल कलकी वरते आपणी कल, कालख टिक्का दए मिटाईआ। आदि जुगादी जिस दा छल, अछल्ल छल धारी आपणा खेल वखाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन दीन दयाल बैठा मल्ल, छप्पर छन्न चार दीवार नज़र कोई ना पाईआ। जोत शब्द शब्द जोत गिआ रल, रल मिल आपणा हुक्म वरताईआ। वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी डल्ल, समुंद सागर खोज खुजाईआ। करे खेल घड़ी घड़ी पल पल, छिन छिन आपणी कार कमाईआ। शाह पातशाहां राज राजानां देवे दल, आपणयां चरना हेठ दबाईआ। साचा तख़त दिल्ली दवारा लए मल्ल, मालक इक्क अखवाईआ। धाम वखा के इक्क निहचल, निसचा सभ दा दए बंधाईआ। प्रभ नूं सृष्टी बदलण लग्गिआं कोई ना होवे खेचल, अंदरो अंदरे सुरती सुरत दए भुआईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सच्चे मुरीद मुशर्द नाल मिल के वेखण, बिन अक्खां आपणी अक्ख खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलकाती दए मिटाईआ।

कलिजुग कूड़ा वेला चुक्कणा, चार कुण्ट खुशी मनाईआ। सफा मलेश उठणा, बस्ते सभ दे बन्न वखाईआ। हँकार विकार कुट्टणा, नाम खण्डा हत्थ उठाईआ। झूठा बूटा पुट्टणा, शौह दरया सुटाईआ। सन्त सुहेलया पुच्छणा, हरिजन मेल मिलाईआ। प्रभ दा तीर निशानउँ कदे ना उकणा, अणयाला आप रिहा चलाईआ। सृष्ट सबाई उस दे अग्गे झुकणा, जो झुकदिआं रिहा तराईआ। दूई द्वैती मेटे दुःखणा, ददर्हीआं दर्द वंडाईआ। भुक्खयां दी कढ्ढे भुक्खणा, तृस्ना तृप्त वखाईआ। एसे कारन गुरू अवतार पीर पैगम्बर कलिजुग अन्त श्री भगवन्त दे औण दीआं सुखदे गए सुखणां, लिखतां भविख्तां वाकां विच्च गए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। (१५ मध्घर २०२१ बिक्रमी

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

उठ जीव जाग जाग जाग, प्रगटे पारब्रह्म अचुत। उठ जीव जाग जाग जाग, प्रभ मिलणे दी आई रुत। उठ जीव जाग जाग जाग, साचा नाता प्रभ जिउँ पिता पुत्त। उठ जीव जाग जाग जाग, झूठा संसार अन्त होए ना मित। उठ जीव जाग जाग जाग, कलिजुग चल्लया विछड़ जाए ना कित। उठ जीव जाग जाग जाग, ईशर प्रगटे ना किसे वार ना थित। उठ जीव जाग जाग जाग, कर दरस महाराज शेर सिँघ आत्म नित। (१ २०५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

उठ जीव जाग, शब्द रसना गाए। उठ जीव जाग, प्रभ दरस दिखाए । उठ जीव जाग, निहकलंक जोत सरूप घर में आए। उठ जीव जाग, चरनीं लाग गेड़ चुरासी प्रभ दे कटाए। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ जोत सरूप निज घर आए । (१-३०२)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

उठ जीव जाग, प्रभ कल विच्च आया । उठ जीव जाग, वेला अन्त प्रभ अन्त कराया। उठ जीव जाग, क्यों माया भरम भुलाया। उठ जीव जाग, क्यों आपणा मूल गवाया। उठ जीव जाग, कर दरस प्रभ रघुराया। उठ जीव जाग, आत्म त्याग मदिरा मास जो आहार बणाया। उठ जीव जाग, प्रभ चरनी लाग कर दरस आत्म सुख पाया । रागन राग, प्रभ सोहँ साचा राग उपजाया । उठ जीव जाग, पहली माघ प्रभ साचा शब्द सुणाया । उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जगत पित आया ।

उठ जीव जाग, प्रभ भए किरपाला। उठ जीव जाग, कर दरस प्रभ दीन दयाला। उठ जीव जाग, जगत पित आप रखवाला। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ कर दरस, आत्म जोत जगाए जिउँ ज्वाला । (१-४२५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

उठ जीव जाग वक्त वहाया। उठ जीव जाग, पतिपरमेश्वर घर में पाया। उठ जीव जाग, निहकलंक कल पाई माया । उठ जीव जाग, कलिजुग वेला प्रभ मिलण दा आया । उठ जीव जाग, भुल भुल क्यों जन्म गवाया। उठ जीव जाग, जोत सरूपी प्रभ कलिजुग खेल रचाया। उठ जीव जाग, झूठे धंदे लाग क्यों माण वधाया । उठ जीव जाग, होण पूरन भाग लाग प्रभ सरनाया। उठ जीव जाग, अनहद शब्द प्रभ सुणावे राग, सोहँ शब्द ढोल वजाया। उठ जीव जाग, चरन लाग, मानस जन्म क्यों जगत गवाया। उठ जीव जाग, साचे प्रभ हत्थ सृष्ट वाग, कलिजुग बेड़ा पकड़ रुड़ाया। महाराज शेर सिँघ शब्द सुणावे अनराग, आत्म धुन विच्च देह वजाया ।

उठ जीव जाग, जगत विकारी । उठ जीव जाग, कलिजुग मायाधारी । उठ जीव जाग, लाग प्रभ चरन दवारी। उठ जीव जाग, छड्ड झूठे धंदे जगत संसारी । उठ जीव जाग, दिसे सभ जगत पसारी। उठ जीव जाग, कलिजुग प्रगटे निहकलंक अवतारी । उठ जीव जाग, चरन लाग, देवे दरस कृष्न मुरारी। उठ जीव जाग, कलिजुग आया महाराज शेर सिँघ नरायण नर अवतारी । (१-३६३)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊